मुंबई मिंट पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंक : छब्बीस : वर्ष : 2022

मुंबई मिंट पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संरक्षक
श्री सुधीर साहू
मुख्य महाप्रबंधक

संपादक
श्री योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
श्री एल. के. पाल
पर्यवेक्षक (राजभाषा)

रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल तथा प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अंक : छब्बीस (वार्षिकांक-2022)
गृह पत्रिका
केवल आंतरिक परिचालन हेतु

संपर्क :

भारत सरकार टकसाल
आईएसओ : 9001-2015,
आईएसओ : 14001-2015 एवं
एनएबीएल/आईएसओ : 17025-2017 प्रमाणित संगठन
(भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं निगम लिमिटेड की इकाई)
सीआईएन : U22213DL2006GOI144763
मिनी-रत्न श्रेणी सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वधीन)
शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई-400 001.
टेलिफोन : 91-22-22270 3184 / 2266 2555
फैक्स : +91-22-2266 1450
ई-मेल : igm.mumbai@spmcil.com
वेबसाइट : www.igmmumbai.spmcil.com

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय		06
2.	5जी (5G)	दिनेश सुथार	07
3.	धर्म और अध्यात्म	स्वप्नील वाघ	10
4.	कविता	पूरेन्द्र सी. दूबे	12
5.	भाषा पुनरावलोकन	योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल	13
6.	गुमशुदा पिता	जगदीश पवार	15
7.	5 चीजे जो हम प्रकृति से सीख सकते हैं	कविता एस. मोरे	17
8.	संस्कृत घोषवाक्ये	सुनिल राँय	19
9.	प्लास्टिक प्रदूषण	एल. के. पाल	20
10.	वल्लम कली रेस	गौरी के कुट्टी	23
11.	सामाजिक दायित्व	नितिन चाफले	25
12.	अंबा नगरी	जे. पी. कावरे	26
13.	दीपावली महोत्सव		29
14.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह		31
15.	हिन्दी पखवाडा का आयोजन		32
16	सेवा निवृत्ति		35

मित्रता दैवीय देन है और मनुष्य के लिए अत्यंत दैवीय वरदान। - ड़िजराइली

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director

:: संदेश ::

मुझे खुशी है कि भारत सरकार टकसाल की गृह पत्रिका 'मुंबई मिंट पत्रिका-2022' अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वस्तुतः हिन्दी एक जागृत और बहुआयामी भाषा है जो अपने अंदर अन्य बोलियों और भाषाओं को आत्मसात करते हुए निरंतर अपना विस्तार व्यापक करती जा रही है। स्वाधीन भारत की राजभाषा और बहुसंख्यक समाज की संपर्क भाषा होने के कारण हिन्दी का विश्व परिदृश्य पहले से अधिक बढ़ा है। विश्व क्षितिज पर भारत आज एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। आर्थिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए सारा जगत भारत की ओर ललक से देख रहा है। विश्व का एक बड़ा बाजार होने के कारण भारत से सहज संपर्क बनाने के लिए विदेशी जन हिन्दी सीखने को उत्सुक हैं। भारतवासी पूरे विश्व में फैले हुए हैं, इससे हिन्दी अपने को विस्तृत कर रही है।

भारत सरकार ने देश की आजादी के 75 वर्ष पूरा होने के अवसर पर इसके गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों को 'आजादी के अमृत महोत्सव' के रूप में मनाने की पहल की है। आइये ! हम सब भी मिलकर उल्लासपूर्वक इस यादगार उत्सव के भागीदार बने और देश के विकास में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें ।

टकसाल, मुंबई अपने विभिन्न उत्पादों से राष्ट्र के आर्थिक निर्माण एवं विकास में बहुमूल्य योगदान दे रही है। तथापि, बढ़ती हुई व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए हमारे उत्पाद वैश्विक स्तर के हों, स्मारक सिक्कों तथा पदकों आदि का उत्पादन बढ़ाते हुए कम से कम समय में उनकी सुपुर्दगी सुनिश्चित करना आवश्यक है। इकाई के कर्मियों का उत्पादन कार्य के साथ-साथ गृह पत्रिका में कविता, लेख अथवा निबंध के रूप में अपनी सहभागिता दिखाना एक सराहनीय कार्य है जो हिन्दी के प्रति उनकी रुचि तथा निष्ठा को रेखांकित करता है।

करोना महामारी के दौरान आप सभी ने सतर्कतापूर्वक, धैर्य, लगन तथा जिस कर्तव्य-निष्ठा से कार्य किया उसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं और जब तक महामारी का पूरा उन्मूलन न हो जाये सामाजिक दूरी, मास्क पहनना तथा इस संबंध में सरकार के दिशा-निर्देशों का अनुपालन आवश्यक है।

पुनः, मैं आशा करती हूँ कि आगे भी राजभाषा के क्षेत्र में मुंबई टकसाल निगम का गौरव बढ़ाता रहेगा। मैं गृह पत्रिका से जुड़े हुए सभी कर्मियों को हार्दिक बधाई देती हूँ और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

तृप्ति घोष
(तृप्ति पी. घोष)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

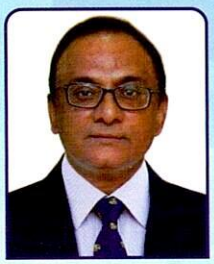

सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन)
SUNIL KUMAR SINHA, Director (Human Resource)

:: संदेश ::

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा 'मुंबई मिंट पत्रिका-2022' का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरा यह मानना है कि किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका उसकी कार्य-संस्कृति, पारस्परिक सहयोग की भावना तथा उनके आपस में पारिवारिक-सदृश्य जुड़ाव को दर्शाता है। जहां तक हिन्दी भाषा की व्यापकता और उसके समावेशी होने का संबंध है, प्रत्येक भाषा क्षेत्र में अनेक क्षेत्रगत, वर्गगत एवं शैलीगत भिन्नताएँ होती हैं। उस क्षेत्र विशेष के भाषिक रूप के आधार पर वहाँ का मानक रूप विकसित होता है। कहावत है- कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पे बानी। हिन्दी विश्व की बहुत बड़ी आबादी के द्वारा बोली जाती है यह ऐसी भाषा है जो सीमाओं में बंद नहीं है वरन, समस्त प्रान्तों की बोलियों, जन-शब्दों को अपने अंदर समाहित करते हुए निरंतर विस्तृत होती जा रही है। आज सूचना एवं प्रौद्योगिकी के समय में कार्यालयों में कम्प्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट होने से वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में सहायता मिल रही है। अनेक सॉफ्टवेयरों की मदद से हिन्दी में कार्य करना सुगम हो गया है। कार्यालयों में इनका अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिन्दी के कार्यों को और बढ़ाना चाहिए।

करोना महामारी जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यपूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना निःसन्देह सराहनीय है और भविष्य में भी ऐसी चुनौतियों से निपटने के लिए संकल्पबद्ध रहना है। एसपीएमसीआईएल की सभी इकाइयाँ राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं और राजभाषा क्षेत्रीय कार्यालय तथा नराकास से मिलने वाले पुरस्कार इस उपलब्धि को इंगित करते हैं। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर मैं, 'मुंबई मिंट पत्रिका' से जुड़े हुए इकाई के समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों एवं संपादक मण्डल को शुभकामना व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि आगे भी विविध लेखन-सामग्रियों को समाविष्ट करते हुए इसकी यात्रा अनवरत जारी रहेगी। पुनश्चः,

कोटि-कोटि कंठों की भाषा,
जन-गण की मुखरित अभिलाषा।
हिन्दी है पहचान हमारी,
हिन्दी हम सबकी परिभाषा।

शुभकामनाओं सहित !

(सुनील कुमार सिन्हा)

अजय अग्रवाल
AJAY AGARWAL
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Under Ministry of Finance, Govt. of India)

:: संदेश ::

अतीव हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई 'मुंबई मिंट पत्रिका-2022' का प्रकाशन कर रही है।

भारत सरकार आजादी के 75 वर्ष पूरा होने के अवसर पर इसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को यादगार बनाने के लिए 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रही है। आइये! भारत की आजादी और इसकी विकास यात्रा में योगदान देने वाले महापुरुषों को समर्पित इस महोत्सव में हम भागीदार बनें और उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें। आजादी की इस यात्रा में हिन्दी ने जन-जन की चेतना में राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति को जागृत करने का कार्य किया।

करोना महामारी ने पूरे विश्व को दुष्प्रभावित किया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी सतर्क और सजग रहते हुए कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करना प्रसंशनीय है।

गृह-पत्रिका किसी भी संस्थान का दर्पण होती है जो कर्मचारियों के विचारों, भावों तथा उनके पारस्परिक सहयोग को प्रदर्शित करती है और उनको स्वयं को अभिव्यक्त करने का माध्यम प्रदान करती है।

मैं, 'मुंबई मिंट पत्रिका' के इस नवीन संस्करण के सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आगे भी अपने लेख, कविता और निबंधों के माध्यम से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

पुनः, गृह पत्रिका के संपादक मण्डल तथा इकाई के समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों को शुभकामना। आप सभी को सुखी और समृद्ध जीवन की मंगलकामना।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)
निदेशक (वित्त)

सत्यमेव जयते

विनय कुमार सिंह, भा.रा.से.
Vinay K. Singh, I.R.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Under Ministry of Finance, Govt. of India)

:: संदेश ::

प्रिय साथियों,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई अपनी गृह पत्रिका 'मुंबई मिंट पत्रिका-2022' का प्रकाशन करने जा रही है।

हिन्दी जन-जन की भाषा है। आजादी के संघर्ष में हिन्दी ने देश की जनता में देशभक्ति का संचार किया। भारत सरकार आजादी के 75 वर्ष पूरा होने पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रही है। हमें आज़ादी के संघर्ष में शामिल महापुरुषों के जीवन-मूल्यों से प्रेरणा लेते हुए देश के लिए और उसके विकास में अपना सर्वस्व योगदान देना चाहिए।

साथियों, देश के आर्थिक और औद्योगिक विकास में एसपीएमआईएल की प्रत्येक इकाई का अप्रतिम योगदान है और करोना काल में भी सतर्क और सजग रहते हुए जिस प्रकार इकाई के समस्त कर्मियों ने उत्पादन-कार्य में पूरी निष्ठा के साथ योगदान दिया वह निश्चित रूप से सराहनीय है और सभी बधाई के पात्र हैं। साथ ही, हमे यह भी ध्यान देना है कि उत्पादन कार्य में गुणवत्ता और पारदर्शिता का समावेश हो। कंपनी के मूल्यों और विजन से प्रतिबद्ध होकर उत्पादन-प्रक्रिया सम्पन्न हो। संस्थान से जुड़े प्रत्येक कर्मचारी का कर्तव्य है कि वह संस्थान के नैतिक एवं व्यावसायिक मूल्यों को सम्मान देते हुए अपना कार्य निष्पादित करे।

गृह पत्रिका संस्थान की विविध गतिविधियों, कर्मियों के भावों और विचारों को आकार देने का एक साझा मंच प्रदान करती है। मैं, मुंबई मिंट पत्रिका से सम्बद्ध सभी कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

'आजादी का अमृत महोत्सव' काल में पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामना

(विनय कुमार सिंह)
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संरक्षक की कलम से...

साथियों!

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर 'मुंबई मिंट पत्रिका' के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। वस्तुतः, गृह पत्रिका संस्थान का प्रतिबिंब होती है जो इकाई के विविध गतिविधियों के साथ कर्मियों के मनोभावों और विचारों को आकार देने के लिए एक मंच प्रदान करती है। उत्पादन कार्य में व्यस्त होने के बाद भी लेख, निबंध तथा कविताओं आदि के माध्यम से गृह पत्रिका में सहभागी होना सराहनीय है।

उल्लेखनीय है कि औद्योगिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और अपने उत्पाद को वैश्विक स्तर पर निर्माण करने के लिए मशीनों के आधुनिकीकरण तथा व्यवसाय के नए तरीकों पर कार्य किया जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण उत्पाद के साथ समयवद्ध सीमा में स्मारक सिक्कों, पदकों को उपलब्ध कराना हमारी प्रतिबद्धता है। पारस्परिक सहयोग, अनुशासन तथा कर्तव्य-निष्ठा के साथ उत्कृष्ट उत्पादन का संकल्प लेकर 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण में सहयोग सबका लक्ष्य होना चाहिए।

कोरोना महामारी के समय प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करना पड़ा यद्यपि अभी महामारी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है इसलिए सामाजिक दूरी, मास्क आदि सभी सुरक्षात्मक उपायों का उपयोग करते हुए सतर्कतापूर्वक कार्य करना वांछनीय है।

मुंबई मिंट पत्रिका के संपादक मण्डल तथा अपने लेखन-सामग्री से इसमें सहयोग देने वाले सभी कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि आगे भी अपने लेखों, निबंधों तथा कविताओं से पत्रिका को सुसज्जित करने में सहभागिता प्रदान करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित!

(सुधीर साहू)
मुख्य महाप्रबंधक

:: संपादकीय ::

गांधी जी का मत था कि किसी राष्ट्र की बुनियाद उसी राष्ट्र की कोई भाषा होनी चाहिए। नदी, पहाड़, जंगल और समुद्र राष्ट्र निर्माता नहीं हो सकते। राष्ट्र के मिट्टी से उपजी जन-भाषाएँ शिक्षा का माध्यम बनकर सांस्कृतिक आधार बनती हैं। जब भाषा की नदी संस्कृति के बनाई हुए घाटों से होकर बहती है तो आम जन उसी भाषा रूप को आदर्श मानकर उसमे डुबकी लगाते हैं । तभी भाषाई अक्षुणता बनाए रखना संभव हो पता है।

मानव जाति की सबसे मूल्यवान धारोहर उसकी भाषा होती है और उसकी कीमत पर संसार का कोई भी विकास एवं उपलब्धि उसे स्वीकार्य नहीं हो सकती। किसी समुदाय को उसकी अपनी भाषा में जीने के अधिकार से वंचित रखना उसकी अस्मिता को खंडित करने जैसा है। भाषाई संस्कार समाज को कुंठित होने से बचा सकता है, उसको उत्कर्ष प्रदान कर सकता है। भाषाएँ निरंतर अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा करती रही हैं तथा सांस्कृतिक उत्तराधिकार के प्रति सतत सावधान रहते हुए अपने भीतर कई वैचारिक वातायन का निर्माण करती हैं। भाषाई आत्मनिर्भरता के बिना कोई भी राष्ट्र संपूर्णता में आत्मनिर्भर नहीं हो सकता और उसकी यह यात्रा परंपरा और सभ्यता के समानान्तर चलते हुए संवाहिका बन सभ्यता को परिभाषित करती है। भाषा और संस्कृति की विरासत समृद्ध होगी तो उत्कृष्ट भाषाई समाज अपने ज्ञान-विज्ञान व विविध कलाओं का सृजन अपनी भाषा में कर स्वभाषा स्वावलंबन, शिक्षा और स्वशासन की आधार भूमि भी तैयार करता है।

आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए देश आत्मनिर्भरता के पथ पर गतिशील हो चला है जिसमें जन-जन की भागेदारी,धैर्य और परिश्रम कुंजी है 'नहि सुप्तष्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा'।

मुंबई मिंट पत्रिका का नवीन संस्करण आपके समक्ष।

(योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल)
उप महाप्रबंधक (रा.भा.)

5G

दिनेश सुथार
उपप्रबंधक (सू. प्रौ.)

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गांव में रहनेवाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को डिजिटल इंडिया का नाम दिया है और सरकारी दफ्तरों में भी सभी प्रकार के कार्य अब डिजिटल रूप में यानि कि इंटरनेट की सहायता से किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हम 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम धीरे-धीरे 5G तकनीक के ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज के इस लेख में हम आप सभी लोगों को 5G नेटवर्क से जुड़ी सारी जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

5G में 'G' का अर्थ क्या है

अब तक 1G से लेकर 5G टेक्नोलॉजी आ चुकी है। कई लोग सोचते हैं, कि आखिर 'G' का क्या तात्पर्य होता है। तो दोस्तों हम आप को बता दें, कि 1G से लेकर 5G तक 'G' का तात्पर्य जनरेशन से होता है, जनरेशन यानी कि पीढ़ी।

1G नेटवर्क 1980 के दशक में लॉन्च किया गया था और यह एनालॉग रेडियो सिग्नल पर काम करता था और केवल वॉयस कॉल को सपोर्ट करता था।

2G नेटवर्क 1990 के दशक में लॉन्च किया गया था जो कि डिजिटल रेडियो सिग्नल का उपयोग करता है और 64 Kbps की बैंडविड्थ के साथ वॉयस और डेटा ट्रांसमिशन दोनों को सपोर्ट करता है।

3G नेटवर्क 2000 के दशक में 1 Mbps-2 Mbps की गति के साथ लॉन्च किया गया था जो कि डिजीटल वॉयस, वीडियोकॉल और कॉन्फ्रेंसिंग सहित टेलीफोन सिग्नल प्रसारित करता है।

4G नेटवर्क 2009 में 100 Mbps - 1 Gbps की पीक स्पीड के साथ लॉन्च किया गया था और यह 3डी वर्चुअल रियलिटी को भी सक्षम बनाता है।

5G नेटवर्क में बिजली की रफ्तार से डेटा ट्रांसफर होगा। जिसमें की यूजर्स 3 घंटे की HD फिल्म को 1 सेकंड से भी कम समय में डाउनलोड कर सकेंगे।

5G के इतने तेज काम करने के पीछे हैं, मिलीमीटर वेब्स, यह एक तरह की रेडियों तरंगे होती हैं। हमारे स्मार्ट फोन और अन्य स्मार्ट डिवाइस इन्हीं मिलीमीटर वेब्स से जुड़े होते हैं। लेकिन अगर किसी जगह पर ज्यादा स्मार्ट फोन होते हैं तो यह frequency बट जाती हैं और नेटवर्क धीमा हो जाता है।

अभी यह मिलीमीटर वेब्स 6 गीगा हर्ट्स पर काम करती हैं, लेकिन 5G आने के बाद यह बढ़कर 30 से 300 गीगा हर्ट्स पर काम करेंगी। 4G पर नेटवर्क की बात करें तो 500 वर्ग किलोमीटर में 10 लाख device कनेक्ट हो सकते हैं। जब कि 5G पर सिर्फ एक वर्ग किलोमीटर में ही 10 लाख डिवाइस कनेक्ट किए जा सकेंगे।

5G नेटवर्क स्पेक्ट्रम क्या है

अगर आप न्यूज को फॉलो करते है तो आपको मालुम होगा की भारतीय दूरसंचार ने 5G के लिए तीन अलग अलग स्पैंड्स में 5G के ट्रायल के लिए जियो और एयरटेल, वोडाफोन और MTNL को दिए गए है। जो भारत में अलग अलग जगह पर 5G के ट्रायल कर रहे हैं।

अगर बात करे 5G के स्पेक्ट्रम में किस तरह के बैंड्स होंगे इसके बारे जानकारी निकल कर सामने आई है कि 5G तकनीक 3400 MHz मेगा हर्ट्ज से लेकर 3600 MHz मेगा हर्ट्ज बैंड्स पर काम कर सकती है। लेकिन 5G स्पैक्ट्रम को पब्लिक इस्तेमाल के लिए और कमर्शियल इस्तेमाल के लिए कंपनी को किस तरह के बैंड्स के स्पेक्ट्रम दिए गए है तो हम इन बैंड्स की बारे बात करे तो 5G स्पेक्ट्रम में सबसे पहले Low बैंड्स होते है जिसमें 7 GHz बैंड्स और दूसरे नंबर मिडबैंड्स 3.5 GHz बैंड्स और इसके बाद हाईबैंड्स 5G जिसमें 26 GHz होते हैं। अभी भारत में 5G के ट्रायल और टेस्टिंग की जा रहे है जिसमें कंपनी की तरफ से भारत में 7 GHz बैंड्स और 3.5 GHz वाले बैंड्स सबसे पहले पब्लिक और कमर्शियल इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होगा और करेंट में लॉन्च हुए सभी 5G नेटवर्क वाले स्मार्ट फोन में आसानी के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

5G इंटरनेट की विशेषताएं

वैज्ञानिक की माने तो 5G तकनीक के द्वारा फोन में 100 GB प्रति सेकंड स्पीड होगी। जिसमें एक साथ कई मूवी और गेम को डाउनलोड किया जा सकता है।

एक्सपर्ट्स के मुताबिक 4G के मुकाबले 5G नेटवर्क के जरिए डाटा ट्रांसफर करने के काम 20 गुना अधिक तेजी से किया जा सकता है।

5G नेटवर्क की स्पीड एक सेकंड में 20 GB से ज्यादा की होगी।

भारत में 5G तकनीक के आने के बाद मोबाइल पर टच करते ही एक सेकंड के हजारवे हिस्से यानी की एक मिली सेकंड में वेबपेज को खोल सकेंगे।

5G नेटवर्क पर पूरी मूवी को 5 से 6 सेकंड में डाउनलोड करना मुमकिन होगी।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी फायदे (Benefit)

इस नई तकनीक की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी सहायता से ऑटोमोबाइल के जगत में औद्योगिक उपकरण एवं संसाधन यूटिलिटी मशीन संचार एवं आंतरिक सुरक्षा भी पहले के मुकाबले और विकसित एवं बेहतर होने के साथ-साथ इनके बीच में संबद्धता की वृद्धि होगी।

5G तकनीक सुपर हाई स्पीड इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ-साथ यह कई महत्त्वपूर्ण स्थानों में उपयोग में लाया जाएगा। इस टेक्नोलॉजी आ जाने से कनेक्टिविटी में और भी ज्यादा विकास एवं शुद्धता प्राप्त होगी।

5G के तकनीक की वजह से ड्राइवरलेस कार, हेल्थ केयर, वर्चुअल रियलिटी, क्लाउड गेमिंग के क्षेत्र में नए-नए विकासशील रास्ते खुलते चले जाएंगे।

क्वॉलिकम के अनुसार अभी तक 5G की तकनीक ने करीब 13.1 ट्रिलियन डॉलर ग्लोबल इकोनामी को आउटपुट प्रदान कर दिया है। इसकी वजह से दुनियाभर में करीब अनुमानित 22.8 मिलियन के नए जॉब अवसर विकसित हो सकते हैं।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी नुकसान

तकनीकी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोध में पाया गया कि 5G तकनीक की तरंगे दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है। इसीके कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसी के परिणामस्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।

दीवारों को भेदने के अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़ पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है। 5G तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखने को मिल सकती है।

कई साधारण लोगों का मानना है, कि 5G तकनीक में जिन किरणों का उपयोग किया जा रहा है, उनका परिणाम काफी घातक सिद्ध हो रहा है, परंतु अभी तक इस विषय में कोई साक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकी है।

निष्कर्ष

5G तकनीक से प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत होने की उम्मीद है। जहाँ तक प्रौद्योगिकी के राष्ट्रव्यापी परिनियोजन का संबंध है, भारत को अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

स्पेक्ट्रम की कीमतों को कम करना और ग्रामीण-शहरी इलाके में तकनीक के अंतर को पाटना, नेटवर्क की पहुँच को देश के हर घर तक बढ़ाना, कुछ ऐसे लक्ष्य हैं जिन पर सरकार को केंद्रित होना चाहिये।

अंतिम लक्ष्य

एक ऐसी तकनीक में बदलाव करना है जो ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के उपयोग करने वालों साथ ही दूरसंचार क्षेत्र की आवश्यकताओं को भी पूरा करती है। नेटवर्क के विकसित होने पर यह आवश्यक है कि इसके वजह से विकास के बढ़ोत्तरी में मदद मिलेगी और लोगो को ज्यादा जल्दी किसी भी ट्रेन टिकट और ऑनलाइन बुकिंग इस तरह के काम को बड़ी आसानी के साथ मिनटों में किया जा सकेगा।

जैसा कि हमने आपको ऊपर पॉइंट्स में 5G नेटवर्क के फायदे और नुकसान बताया है। दुनिया का दस्तूर है किसी चीज से लोगो को फायदा होता है तो कुछ नुकसान भी होता है। यह बात समझनी भी होगी।

जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।

बूँद-बूँद जल गिरने से क्रमशः घड़ा भर जाता है। यही सभी विद्याओं, धर्म तथा धन का हेतु (कारण) है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि विद्या, धर्म एवं धन की प्राप्ति के लिए उद्यम के साथ-साथ धैर्य का होना भी आवश्यक है, क्योंकि इन तीनों का संचय धीरे-धीरे ही होता है।

धर्म और आध्यात्म*

स्वप्नील वाघ
कनिष्ठ कार्यालय सहायक

मैंने अपने जीवन में नयी पीढ़ी के युवक और युवतियों को यह कहते हुए सुना हैं, - 'I am not Religious, I am Spiritual'

अर्थात मैं धार्मिक नहीं हूँ पर मैं आध्यात्मिक हूँ। परन्तु जब उनसे यह प्रश्न किया जाता है कि धर्म क्या है और आध्यात्म क्या हैं? तो या तो वे मौन हो जाते हैं या फिर जो बोलते हैं वह धर्म और आध्यात्म की सही व्याख्या नहीं होता है।

इसलिए मैं एक छोटी सी कोशिश करना चाहता हूँ, ताकि हम धर्म और आध्यात्म के विषय को समझ सकें। -

धर्म

धर्म के विषय में कुछ भी कहने से पहले मैं मनुस्मृति का यह १लोक कहना चाहूँगा -

धृतिःक्षमादमो अस्तेयम्शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।

अर्थात धृति (धैर्य), क्षमा (क्षमा करना), दम (बुरी इच्छाओ का दमन करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (शरीर और मन की स्वच्छता), इन्द्रिय निग्रह (अपने मन तथा इन्द्रियों को अपने वश रखना), धी (विवेक), विद्या (ज्ञानवान होना), सत्य (सत्य बोलना), अक्रोध (क्रोध न करना) ये धर्म के 10 लक्षण हैं।

अगर ये 10 लक्षण आप किसी में भी पायें वह चाहे किसी भी धर्म या किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला हो वह धार्मिक है। यदि ऐसा व्यक्ति जो किसी भी धर्म को नहीं मानता पर उसके अन्दर ये 10 गुण हैं, तो वह भी धार्मिक है।

धर्म को यदि परिभाषित करें तो उसकी परिभाषा होगी-

'यतो अभ्युदयनिः श्रेयसंसिद्धि स धर्मः'।।

अर्थात जिस व्यवहार से इस लोक में उन्नति हो तथा परलोक में भी कल्याण हो अर्थात आत्मा की इतनी उन्नति हो कि वह परम बन जाये। वही धर्म हैं।

धर्म वह हैं जिससे आप अलग न किये जा सकें। जैसे आग का धर्म है जलाना और उससे वह अलग नहीं की जा सकती। उसी प्रकार मनुष्य का धर्म वह है जिसे मनुष्य से अलग न किया जा सके। और वह क्या है ?

वह है प्रेम। क्योंकि मनुष्य बिना प्रेम के नहीं रह सकता। जीसस क्राइस्ट ने बाईबिल में कहा है-

जैसे मैं तुम लोगो से प्रेम करता हूँ, तुम लोग भी अपने लोगो से उसी प्रकार प्रेम करो। क्योंकि मेरा परमपिता भी मुझसे उसी प्रकार प्रेम करता है।

पैगम्बर मोहम्मद साहब ने भी इस्लाम में सभी से भाई-भाई की तरह व्यवहार करने की बात कही थी। मेरी बात को यहाँ पर अन्यथा न लें। प्रेम से मेरा तात्पर्य दिव्य प्रेम से है। ईश्वर प्रेम से है, न कि लौकिक प्रेम से। जो भी ईश्वर से प्रेम करना सीख जाता है वह फिर इस संसार में किसी से घृणा नहीं करता। उसके लिए फिर सब ईश्वरमय हो जाता है।

अब अगर धर्म के अंग्रेजी शब्द Religion को अगर हम देखें तो हम पायेंगे कि यह लैटिन भाषा के शब्द Religare से बना है जिसका अर्थ है बाँधना। अर्थात मनुष्य को विभिन्न नियमों में बाँधना। पर क्यों बाँधना ?

क्योंकि मनुष्य अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। और वह है सभी दुखों से मुक्त होकर ईश्वर प्रेम को प्राप्त करना।

कोई भी संगठन बिना Regulation के आगे नहीं बढ़ सकता। उसी प्रकार मनुष्य भी बिना Regulation के आगे नही बढ़ सकता और उसे यह Regulation धर्म प्रदान करता है।

श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय-18 के 66 वें श्लोक में भगवान अर्जुन से कहते हैं, -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

अर्थात सभी धर्मों को छोड़कर एक मेरी शरण में आओ मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा।

यह बात आज से 5000 साल पहले कही गयी है। तब न ही इस्लाम धर्म था और न ही ईसाई धर्म और न ही अन्य धर्म तो भगवान जब अर्जुन से कहते हैं कि सभी धर्मों को छोड़कर तो इसका क्या अर्थ है, क्योंकि उस समय तो एक मात्र सनातन धर्म था।

इसका अर्थ यह हैं कि तुम अपनी समस्त इच्छाओं और स्वभाव को त्याग कर मेरे शरण आ जाओं। आपका स्वभाव ही आपका धर्म बन जाता है।

तो धर्म इस लोक में और परलोक में कल्याण करने वाला और आपको ईश्वर तक पहुँचाने वाला मार्ग है।

आध्यात्म

आध्यात्म को यदि एक वाक्य में परिभाषित किया जाये तो हम कह सकते हैं -

मन को उस उच्चतम अवस्था पर ले जाना जहाँ से फिर नीचे गिरना सम्भव न हो।

स्वामी राम कृष्ण परमहंस कहते थे -

शुद्ध मन, आत्मा और परमात्मा ये तीनों एक ही चीजें हैं।

श्रीमद्भगवत महापुराण के 11 वें स्कन्द के 23 वें अध्याय

में एक तितिक्षु ब्राह्मण की कथा आती है, जिसके सार में यह निकल कर आता है कि -

इस संसार की सारी साधनाओं का एक मात्र फल अपने मन पर नियंत्रण हो जाना है।

तो आध्यात्म का अर्थ है, अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करके अपने मन को अतिचेतनावस्था पर ले जाना। जिसे समाधि कहते है।

विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिक साधनायें मात्र अपने मन और इन्द्रियों को नियन्त्रित करने के लिए और अपने मन को उच्च अवस्था तक ले जाने के लिए ही होती है।

धर्म और आध्यात्म में संबंध

यदि आध्यात्म परम लक्ष्य है, तो धर्म वहाँ तक पहुँचने का मार्ग है। यदि आध्यात्म भीतरी साधन है, तो धर्म बाहरी साधन है। आध्यात्म और धर्म एक ही साईकल के दो पहिये की तरह हैं, यदि एक भी खराब होगा तो दूसरे पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।

धर्म और आध्यात्म दोनों ही मनुष्य जीवन के जरूरी भाग है जिनके बिना मनुष्य अपने परम लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकता।

कविता

पुरेन्द्र सी. दूबे
धातु-परीक्षण प्रयोगशाला

बचपन

बचपन तेरा नाम निराला
क्या आयेगा तू दोबारा?

न दिल में था मैल किसी के,
न किसा का बैर किसी से।

पैरों में रहती थी थकाने,
फिर भी चेहरों पर मुस्कानें।

माँ की वो मीठी सी लोरी,
पापा की चूरन की गोली।

भाई से लड़ते रहते थे,
फिर भी बिना न उनके रहते थे।

कहाँ गया वो बचपन प्यारा?
जिसमें दादा-दादी रहते थे।

वो प्यारी सी मुस्काने,
जिसके घरवाले थे दिवाने।

काश! आ जाए वो बचपन प्यारा,
हो जाए सब दुःखों से किनारा।

बचपन तेरा नाम निराला
क्या आयेगा तू दोबारा?
क्या आयेगा तू दोबारा?

एक मिनट...

दुनिया बदल जाती हैं;
एक मिनट में;
काया पलट जाती हैं;
एक मिनट में;
जिन्दगी बन जाती हैं;
एक मिनट में;
अपने पराए हो जाते हैं;
एक मिनट में;
दुनिया में करोड़ो जन्म लेते हैं;
एक मिनट में;
लाखों मर जाते हैं;
एक मिनट में;
काम भले हो कई घंटो का
पर कहते यही है कि,
अभी आया, एक मिनट में;
अमीर बनता है गरीब;
एक मिनट में;
रोडपति बने करोड़पति
एक मिनट में;
मैं भी फँसा हूँ इस,
एक मिनट के चक्कर में;
निकाल सको तो निकालो
इस चक्रव्यूह से,
सिर्फ एक मिनट में!!!

भाषा पुनरावलोकन

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल
संयुक्त महाप्रबंधक (रा.भा.)

भाषा मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आविष्कार है। यह मनुष्य के मध्य मात्र संवाद का माध्यम भर नहीं है, बल्कि इसमें उसके संस्कार, उसकी अस्मिता और उसकी पीढ़ियों से संचित गौरव अंतर्निहित है। भाषा आमतौर पर भाव या विचार की अभिव्यक्ति का साधन मानी जाती है, किन्तु उसकी भूमिका इससे बहुत बड़ी है। हमें समाज या विश्व का बोध भी भाषा के माध्यम से होता है। भाषा बहू-समर्थ संरचना है। हमारी मति व कृति का अधिकांश उसी के जरिये या उसी में अभिव्यक्त होता है। भारतीय व्याकरण-दर्शन के शिखर व्यक्तित्व भर्तृहरि ने उसकी क्षमता के बारे में कहा है, 'जगत में ऐसा कोई प्रत्यय या विचार नहीं है, जो भाषा के अधीन या उस पर आश्रित नहीं है। नसोस्तीप्रत्ययोलोकेयः शब्दानुगमाद्रिते'। प्रयोग के लिहाज से देखें तो भाषा अभिव्यक्ति से पहले चिंतन का माध्यम है। पहले सोचते हैं फिर व्यक्त करते हैं। कुल मिलाकर कहें तो भाषा बोध, चिंतन, सम्प्रेषण और पारस्परिक सहयोग का माध्यम है, जिसका स्वरूप है सार्थक ध्वनि-प्रतिकों (शब्दों, वाक्यों) की व्यवस्था।

विचारों का आदान प्रदान या वाणी द्वारा अभिव्यक्ति ही भाषा है। भाषा का प्रारम्भिक रूप बोली है। भाषा सामाजिक संपत्ति है जो अनुकरण के द्वारा प्राप्त की जाती है। यह सम्प्रेषण का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। अज्ञेय ने कहा है 'भाषा कल्प वृक्ष के समान है । यदि भाषा को ठीक तरीके से साधा जाये तो वह हमें सब कुछ दे सकती है।' भाषा केवल शब्दों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि इसका दायित्व समाज को विचारशील और बोधगम्य बनाना है। एक ओर जहां भाषा मनुष्य की सभ्यता, संस्कृति, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान की विरासत को अक्षुण्य रखती है वहीं आधुनिक संदर्भों में विकास के प्रतीकों को, राष्ट्र के गौरव को सहेजने का काम करती है। भाषा व्यक्तित्व का अंग होती है और वह व्यक्ति की अस्मिता का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे राष्ट्रीय या जातीय स्वाभिमान होता है, वैसे ही भाषिक स्वाभिमान भी होता है। इसीलिए भाषा से जुड़े विभिन्न विवाद भी होते हैं किन्तु इनके बीच वही भाषा उभरकर सामने आती है और अपना वर्चस्व बना पाती है जिसमे विपुल शब्द-सम्पदा, अपार अर्थवहनीयता हो, जो अभिव्यक्ति के विभिन्न आयामों को स्पर्श कर सकती हो जिसके साहित्य में लोकरंजन ही नहीं लोक कल्याण का भाव भी निहित हो। हिन्दी ऐसी ही भाषा है। भाषा और संस्कृति के अटूट संबंध हैं। भाषा को समझने और उसका सटीक प्रयोग करने के लिए उससे जुड़ी सांस्कृतिक मान्यताओं का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है और उसी प्रकार स्थानीय संस्कृति को समझने के लिए भी स्थानीय भाषा का माध्यम ही सशक्त माध्यम है। इस प्रकार भाषा और संस्कृति में अन्योन्याश्रित संबंध होने के कारण एक का अस्तित्व दूसरे के बिना अकल्पनीय है। भाषा, साहित्य, शिक्षा, संस्कार और संस्कृति किसी देश का भविष्य एवं उसकी दिशा निर्धारित करते हैं। राष्ट्र भाषा -संपर्क भाषा के माध्यम से राष्ट्र संवाद करता है और लोग एक दूसरे से भावनात्मक और राष्ट्रीय धरातल पर जुड़ते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है, 'भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है, जिसकी यात्रा श्रुति, भोज-पत्रों, ताड़-पत्रों, भित्ति-चित्रों, शिला-लेखों, ताम्र-पत्रों आदि के रास्तों से होते हुए आज डिजिटल युग में प्रवेश करते हुए सतत प्रवाहमान है। भाषा बड़ी रहस्यमयी देवी है। यह नई सृष्टि करती है। इतिहास विधाता के किए कराये पर वह ऐसा पर्दा डाल देती है कि कभी-कभी दुनियाँ ही बदल जाती है।'

राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र (NBRC) मानेसर, हरियाणा ने प्रमाणित किया है कि जब रोमन लिपि वाली भाषा जैसे अँग्रेजी का प्रयोग किया जाता है तब हमारे मस्तिष्क का बांया भाग सक्रिय होता है और जब चित्र लिपि वाली भाषा जैसे चीनी का प्रयोग किया जाता है तब मस्तिष्क का दांया हिस्सा सक्रिय होता है लेकिन जब

देवनागरी वाली भाषा जैसे हिन्दी का प्रयोग किया जाता है तब मस्तिष्क का बांया, दांया तथा मध्य भाग सभी सक्रिय हो जाते हैं और उसका संतुलित विकास होता है। गांधी ने कहा था 'सभी भाषाओं की जरूरतों के अनुसार ढाल सकने की खूबी देवनागरी लिपि में है उतनी और किसी लिपि में नहीं। इस प्रयोजन के लिए कोई भी भाषा उतनी परिष्कृत नहीं जितनी देवनागरी।' अपनी वैज्ञानिकता के कारण ही कंप्यूटर के लिए देवनागरी सर्वश्रेष्ठ विकल्प मानी जाती है। देवनागरी लिपि के वर्णों का वर्गीकरण पूर्णतया वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ किया गया है। लीना महंदले के अनुसार-'भारतीय मनीषियों ने पहचाना कि वर्णमाला में विज्ञान है। ध्वनि के उच्चारण में शरीर के विभिन्न अवयवों का व्यवहार होता है। इस बात को पहचानकर शरीर-विज्ञान के अनुरूप भारतीय वर्णमाला बनी और उसका वर्गवारी भी निर्धारित हुई। भाषा के प्रयोग के लिए शरीर के जिन अंगों की सहायता ली जाती है वे फेफ़डे से नाक तक होते हैं, जिसका नियंत्रण मस्तिष्क करता है और तदनुसार ही उनके प्रयोग से उत्पन्न ध्वनियों का वर्गीकरण किया गया है। सुरेन्द्र भटनागर के अनुसार लिपि में वर्ण निरर्थक रूपांकन नहीं है देवनागरी में कोई भी ऐसा वर्ण आकृति नहीं है, जिसमें आकार का प्रतीक रूप दंड या स्तम्भ (।)न हो । जिस प्रकार बिना स्वर के हम किसी भी व्यंजन का उच्चारण नहीं कर सकते उसी प्रकार बिना स्तम्भ का प्रयोग किए हम किसी वर्ण को नहीं लिख सकते।

भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी की भूमिका संपर्क, सम्प्रेषण और सानिध्य की अर्थात विश्व पटल पर बहुआयामी प्रासंगिकता है। आज जन संचार के नए माध्यमों के साथ यह युग हिन्दी मीडिया का युग है। मीडिया के द्वारा ही हिन्दी आगे बढ़ी है। मोबाइल और इन्टरनेट के कारण इसकी पहुँच वैश्विक हुई है। हिन्दी की प्रमुख ताकत इसकी संप्रेषणीयता है। हिन्दी के यूनिकोड होने से ब्लॉगर्स की संख्या बढ़ी है। वर्तमान में ब्लॉग-लेखन को एक समानान्तर-मीडिया का दर्जा-सा मिल गया है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में इन ब्लॉगों की महती भूमिका है। किसी ने कहा है-आज का ब्लॉग कल की पुस्तक है। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। इसमें ग्रहणशीलता का गुण है क्योंकि वही भाषा विकसित होती है जिसमें अन्य भाषा के शब्दों को पहचानने का गुण हो। आज विश्व पटल पर निरंतर विस्तार पाते वेब आधारित मीडिया की अनन्य भूमिका दिखाई दे रही है। व्यापार बढ़ाने हेतु सबसे जरूरी माध्यम है भाषा, जिसके जरिये उत्पादक अपने वस्तु को खरीददार तक पहुंचा सकते हैं। उसे बेच सकते हैं। भारत में हिन्दी को अपनाना विदेशी कंपनियों की आवश्यकता है। हिन्दी की लोकप्रियता के कारण ही गूगल असिस्टेंट ने अपने इलेक्ट्रोनिक उत्पादों को हिन्दी में समझने लायक बना दिया है। अमेजोन का प्रोडक्ट एलेक्सा असिस्टेंट अब हिन्दी के साथ क्षेत्रीय बोली की दिशा में सशक्त प्रयास कर रहा है। आज अँग्रेजी के बाद इन्टरनेट पर जिस भाषा का वर्चस्व है वह हिन्दी ही है। माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स के अनुसार जब बोलकर लिखने की तकनीक उन्नत हो जाएगी हिन्दी अपनी लिपि की श्रेष्ठता के कारण सर्वाधिक सफल होगी। इन्टरनेट पर पंद्रह से ज्यादा हिन्दी सर्च इंजन मौजूद है। सोशल मीडिया पर हिन्दी छाई हुई है। डिजिटल दुनियाँ में हिन्दी की मांग अँग्रेजी की तुलना में पाँच गुना तेज है। किसी भी विचार या उत्पाद के वैश्विक स्तर पर मान्य होने के लिए आवश्यक है कि वह भाषा-परिवेश एवं मत-मतांतरों की सीमा को पार कर सबको या लगभग सबको ग्राह्य हो। भाषा की वैश्विकता को परखने के लिए कुछ मानदंड जैसे-सुलभता, ग्राह्यता, सर्वजनीयता, धर्म, जाति, आयु, देश-कालादि बंधनों से परे, आस्था, विश्वास, भक्ति एवं तर्क परखना आदि हो सकता है। हिन्दी क्यों और कैसे वैश्विक बन रही है इसको समझने के लिए इस भाषा को सीखने-समझने और ग्राह्य करने की सुगमता को परखना चाहिए। जैसे अँग्रेजी भाषा-रोमन लिपि आज क्यों लिंग्वाफ्रेंका के रूप में मानी जाती है। भाषाविद एकमत हैं कि इसकी लिपि अवैज्ञानिक तथा भाषा में व्याकरणिक दोष है। यही कारण है की जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने अपनी वसीयत में लिखा है कि रोमन लिपि की वैज्ञानिकता में सुधार लाते हुए इसको ध्वन्यात्मक बनाने वाले को मेरी जायदाद का एक हिस्सा मिलना चाहिए। हिन्दी की देवनागरी लिपि को सबसे अधिक वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक घोषित किया गया है। अर्थात हिन्दी में जो उच्चारित करते हैं बोलते हैं वही लिखते हैं। राष्ट्र की सभी भाषाओं को एक माला के रूप में सँजोकर निरंतर विस्तृत होती जा रहीं हिन्दी देश तथा देशांतर में भारतीयता की पहचान है और हमारा गौरव है।

गुमशुदा पिता

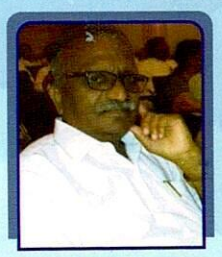

जगदीश पवार
वरिष्ठ प्रचालक

वडिल, बाबा, पापा, डेडी, पिता को लिखने और बोलने में बहुत अच्छा लगता है इस बात को हममें से हर कोई आसानी से जानता है और 'पिता' शब्द का उच्चारण करता है। माँ घर को खुशहाल रखती है तो पिता घर का अस्तित्व है। लेकिन इस अस्तित्व के बारें में किसी ने सोचा है क्या ?

भले ही पिता महत्त्वपूर्ण है, लेकिन उनके बारे में बहुत कुछ बोला या लिखा नहीं जाता है। कोई भी व्याख्याता उसके बारे में ज्यादा नहीं लिख रहा है, लेकिन वह लंबे समय से केवल 'मां' के बारे में बात कर रहा है। संत ने माता के महत्त्व के बारे में अधिक बताया है। देवताओं ने भी मां की ही स्तुति की है। अच्छी बातों के लिए मां की सहानुभूति दी जाती है लेकिन पिता के बारे में कहीं बात नहीं की जाती है। कुछ लोगों ने पिता के बारे में कोई उल्लेख भी किया है तो केवल गुस्सैल, नशेड़ी, आक्रामक के रूप में। समाज में इस तरह के पिता 1 या 2 प्रतिशत हो सकते है, लेकिन अच्छे पिताओं का क्या होगा?

माँ के पास आँसू हैं, वह रोकर अपने मन को हल्का कर लेती है लेकिन पिता का क्या? वह तो रो भी नहीं सकता। माँ रोती है तो उसको सांत्वना भी पिता ही देता है। ...रोने वाले से भी ज्यादा तो सबको समझाने वाले पिता की क्या हालात होती होगी? लेकिन पिता को यह करना पड़ता है और यह करना होगा.. क्योंकि बाती, ज्योति से भी ज्यादा गर्म है ना? लेकिन श्रेय हमेशा ज्योति को ही जाता है। माँ जो रोज का भोजन बनाती है, वह हमारे मन में है, लेकिन जीवन की डोरी को सुविधाजनक बनाने वाले पिता को हम कितनी आसानी से भूल जाते हैं। माँ रोती है लेकिन पिता रो नहीं सकता। पिता के मृत्यु के बाद भी उसका बेटा रो नहीं पाता क्योंकि छोटे भाई बहनों की जिम्मदारी उसको निभाना है। पत्नी चल बसे तो बच्चों की जिम्मदारी। माँ जीजाबाई ने छत्रपति शिवाजी को राजा जरूर बनाया, लेकिन उसी के साथ-साथ उनके पिता शहाजी की शौर्यगाथा भी याद रखनी चाहिए। देवकी और यशोदा मैया के गुणगान जरूर गाओ लेकिन तूफानी वर्षा में सूप में रख कर अपने पुत्र को ले जाने वाले उस वासुदेव का भी ख्याल करो। राम कौशल्या का पुत्र अवश्य है, लेकिन वह उस दशरथ का भी पुत्र था जो वियोग में मर गया।

पिता की टूटी चप्पल, उनकी फटी बानियाँन, बढ़ी हुयी दाढ़ी...उनकी बचत दिखाता है...और उसी बचत से बच्चो को लिया हुआ नया सूट... लड़की का नया ड्रेस, खुद पुरानी पैंट पहनते है लेकिन लड़का सलून मे 50 और लड़की बुटीपार्लर में 100 रुपये खर्चा करती है... लेकिन वही पिता अपने दाढ़ी करने का साबुन खत्म होने पर नहाने के साबुन से अपनी दाढ़ी बनाता है। कभी-कभी तो पानी लगाकर ही बना लेता है। पिता कभी बीमार पड़े तो दवाखाने में नहीं जाते वह बीमारी को नहीं डरते लेकिन डॉक्टर साहब ने एक महीने का आराम बताया तो क्या करेंगे इस डर से...क्योंकि लड़की की शादी, लड़के की शिक्षा अभी बाकी है, घर पर कमाने वाला कोई नहीं.. हैसियत न होने के बावजूद लड़के को डॉक्टर, इंजीनियर बनाने के लिए पिता दिन-रात जूझता रहता हैं.. कभी थकता नहीं..

सभी नहीं, लेकिन कुछ बच्चे है जो महीने के पॉकिट मनी पर दोस्तो को परमिट रूम मे पार्टी देते है और जो पिता पैसे भेजता है उनके के बारे में जोक बनाकर हँसते है। एक दूसरे को उनके पिता के नाम से आवाज दी जाती है।

जिस घर मे पिता होता है उस घर की तरफ कोई गलत नजर से नहीं देख सकता.. क्योंकि घर का मालिक पिता रहता है। वह अगर कुछ काम करे या ना करे फिर भी उसका एक अलग अस्तित्व समाज में रहता है। माँ होना या माँ इस शब्द को पिता के कारण अस्तित्व प्राप्त होता है । किसी भी परीक्षा के रिज़ल्ट के बाद माँ अपने बच्चे का खूब गुण गाती है लेकिन चुपके से मिठाई का डब्बा लाने वाले पिताजी किसी के ध्यान में नहीं रहते। चटका लगाने पर, खरोच आने पर माँ को याद करते है.. लेकिन जब बड़ा ट्रक सामने आता है तो अपने बाप को ही याद करते है..यानि बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करने के लिए पिता की जरूरत होती है, किसी अच्छे कार्य में घर के सभी लोग जाते है लेकिन कोई बड़ी दुर्घटना होती है तो पिता को ही जाना पड़ता है।

लड़के के जॉब के लिए साहब के सामने झुकने वाला पिता.. लड़की की शादी के लिए दरदर भटकने वाला पिता... ही है। अपने घर के लिए खुद के दर्द को न देखने वाला पिता कितना महान है..? पिता को पूरी तरह समझने वाली होती है उनकी लड़की.. वह जब ससुराल से फोन पर बात करती है तो पिता की बदली हुई आवाज को सुनकर सौ प्रश्न पूछने लगती है.. और यही है एक पिता के सम्पूर्ण जीवन की कमाई...

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च ।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।।

महान्पुरुष सम्पत्ति (सुख) एवं विपत्ति (दुःख) में उसी प्रकार एक समान रहते हैं, जिस प्रकार सूर्य उदित होने के समय भी लाल रहता है और अस्त होने के समय भी। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि महान् अर्थात् ज्ञानी पुरुष को सुख-दुःख प्रभावित नहीं करते। न तो वह सुख में अत्यन्त आनन्दित ही होता है और न दुःख में हतोत्साहित।

5 चीजे जो हम प्रकृति से सीख सकते हैं

कविता एस. मोरे
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

आप सबको प्रकृति और मनुष्य का क्या संबंध है ये तो पता ही होगा। पर मैं आज आपसे मनुष्य और प्रकृति के एक अलग ही संबंध के बारे बात करूँगी। और वो संबंध है शिक्षक तथा विद्यार्थी का। जी हाँ, प्रकृति ही हमारी सबसे बड़ी शिक्षक है। ये हमें हर पल कुछ न कुछ सीखाती रहती है बस जरूरत है तो थोड़ा ध्यान देने की। आज तक मनुष्य ने जो कुछ भी हासिल किया है वो प्रकृति से सीख लेकर ही किया है। न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण (gravity) का पाठ प्रकृति ने ही सीखाया है। कई अविष्कार भी प्रकृति से प्रेरित है। इन सबके अलावा प्रकृति हमें ऐसे गुण भी सीखाती है जिससे हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते है और इसे बेहतर बना सकते है। वैसे इसकी सूची तो बहुत लम्बी हो सकती है पर मैं यहाँ ऐसी 5 चीजों की बात करूँगी जो हम प्रकृति से सीख सकते हैः

1) पतझड़ का मतलब पेड़ का अंत नही :

कभी-कभी हमारे साथ कुछ ऐसा घटित हो जाता है जिससे हम बहुत निराशा महसूस करते हैं। ऐसा लगता है जैसे अब सब कुछ खत्म हो गया इससे कई लोग अवसाद (depression) में चले जाते हैं तो कई लोग बड़ा और बेवकूफी भरा कदम उठा लेते हैं जैसे आत्महत्या। पर जरा सोचिये पतझड़ के समय जब पेड़ पर एक भी पत्ती नही बचती है तो क्या उस पेड़ का अंत हो जाता है? नहीं। वो पेड़ हार नही मानता नए जीवन और बहार के आश में खड़ा रहता है और जल्द ही उसमें नयी पत्तियाँ आनी शुरू हो जाती है, उसके जीवन में फिर से बहार आ जाती है। यही प्रकृति का नियम है। ठीक ऐसे ही अगर हमारे जीवन में कुछ ऐसे निराशाजनक पल आते है तो इसका मतलब अंत नही बल्कि ये इस बात का संकेत है कि हमारे जीवन में भी नयी बहार आएगी। अतः हमें सब कुछ भूलकर नयी जिन्दगी की शुरूआत करनी चाहिये। और ये विश्वास रखना चाहिए कि नयी जिन्दगी पुरानी से बेहतर होगी।

2) कमल किचड़ में भी रहकर अपना अलग पहचान बनाता है :

यह मेरा पसंदीदा वाक्य (favorite line) है। यही बात मुझें बुराई के बीच रहकर भी अच्छा करने के लिये प्रेरित करती है। जिस तरह कमल कीचड़ में रहकर भी अपने अंदर कीचड़ वाले गुण विकसित नही होने देता है उसी तरह चाहे हमारे आस-पास कितनी ही बुराईयाँ हो पर उसे अपने अंदर पनपने नही देना चाहिये। हमें अपना अलग पहचान बनाना चाहिये।

3) नदी का बहाव ऊँचाई से नीचे की ओर होता है :

जिस तरह से नदी में पानी का बहाव ऊँचे स्तर से नीचे स्तर की ओर ही होता है उसी तरह हमारी जिन्दगी में भी प्रेम भाव का प्रवाह बड़े से छोटे की ओर होता हैं इसलिये हमें कभी भी अपने आप को दूसरों के सामने ज्ञानवान या बड़ा बताने की जरूरत नही है और इससे कोई फायदा भी तो नही है उल्टा प्रेम भाव हम तक बहकर नहीं आयेगा।

4) ऊँचे पर्वतों में आवाज का परावर्तन:

जब कोई पर्वत की ऊँची चोटी से जोर से आवाज लगाता है तो वही आवाज वापस लौटकर उसी को सुनाई देती है। विज्ञान में इस घटना को ईको (echo) कहते है पर यही नियम हमारे जीवन में भी लागू होती है। हम वही पाते हैं जो हम दूसरों को देते हैं। हम जैसा व्यवहार दूसरों के लिये करते हैं वही हमें वापस मिलता हैं यदि हम दूसरों का सम्मान करते हैं तो हमे भी सम्मान मिलेगा। यदि हम दूसरों के बारे मे गलत भाव रखेंगे तो वो वापस हमें ही मिलेगा। अतः आप जैसा भी व्यवहार करें याद रखिये कि वो लौटकर आपको ही मिलने वाला है।

5) छोटे पौधो के अपेक्षा विशाल पेड़ को तैयार होने में ज्यादा समय लगता है:

जिस तरह विशाल पेड़ को तैयार होने में ज्यादा समय लगता है उसी तरह हमारे महान लक्ष्य को भी पूरा होने में समय लगता है। लेकिन कुछ लोग धैर्य नहीं रख पाते और अपना काम बीच में ही छोड़ देते हैं। ऐसा करने वाले को बाद में पछतावा ही मिलता है। इसलिए बड़े लक्ष्य में सफलता के लिये कड़ी मेहनत के अलावा धैर्य की भी आवश्यकता होती है।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना,
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ।।

अर्थात् : दुर्जन की मित्रता शरुआत में बड़ी अच्छी होती है और क्रमशः कम होने वाली होती है । सज्जन व्यक्ति की मित्रता पहले कम और बाद में बढ़ने वाली होती है । इस प्रकार से दिन के पूर्वार्ध और परार्ध में अलग-अलग दिखने वाली छाया के जैसी दुर्जन और सज्जन व्यक्तियों की मित्रता होती है ।

संस्कृत घोषवाक्ये

सुनिल राँय
दवाखाना विभाग

भारत में विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत के एक लाइन में उसके महत्त्व के हिसाब से वाक्यांश बनाया गया है, पढ़िए संस्कृत घोषवाक्ये।

- भारत सरकार : सत्यमेव जयते
- लोक सभा : धर्मचक्र प्रवर्तनाय
- उच्चतम न्यायालय : यतो धर्मस्ततो जयः
- आल इंडिया रेडियो : सर्वजन हिताय सर्वजनसुखाय
- दूरदर्शन : सत्यं शिवं सुन्दरम्
- गोवा राज्य : सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्
- भारतीय जीवन बीमा निगम : योगक्षेमं वहाम्यहम्
- डाक तार विभाग : अहर्निशं सेवामहे
- श्रम मंत्रालय : श्रम एव जयते
- भारतीय सांख्यिकी संस्थान : भिन्नेष्वेकस्य दर्शनम्
- थल सेना : सेवा अस्माकं धर्मः
- वायु सेना : नभःस्पृशं दीप्तम्
- जल सेना : शं नो वरुणः
- मुंबई पुलिस : सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय
- हिंदी अकादमी : अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्
- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञानं अकादमी : हव्याभिर्भगः सवितुर्वरेण्यम्
- भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी : योगः कर्मसु कौशलम्
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग : ज्ञान-विज्ञानं विमुक्तये
- नेशनल कौंसिल फॉर टीचर एजुकेशन : गुरुर्गुरुतमो धाम
- गुरुकुल काङ्गडी विश्वविद्यालय :
- ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत
- इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय : ज्योतिर्व्रणीत तमसो विज्ञानन
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय : विद्ययाऽमृतमश्नुते
- आन्ध्र विश्वविद्यालय : तेजस्विनावधीतमस्तु
- बंगाल अभियांत्रिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवपुर : उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत
- गुजरात राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय : आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
- संपूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय : श्रुतं मे गोपाय
- श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय : ज्ञानं सम्यग्वेक्षणम्
- कालीकट विश्वविद्यालय : निर्भय कर्मणा श्री
- दिल्ली विश्वविद्यालय : निष्ठा धृतिः सत्यम्
- केरल विश्वविद्यालय : कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा
- राजस्थान विश्वविद्यालय : धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा
- पश्चिम बंगाल राष्ट्रीय न्यायिक विज्ञान विश्वविद्यालय :
- युक्तिहीने विचारे तु धर्महानिः प्रजायते
- वनस्थली विद्यापीठ : सा विद्या या विमुक्तये।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : विद्यामृतमश्नुते।
- केन्द्रीय विद्यालय : तत् त्वं पूषन् अपावृणु
- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड : असतो मा सद्गमय
- प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, त्रिवेन्द्रम : कर्मज्यायो हि अकर्मणः
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर : धियो यो नः प्रचोदयात्
- गोविंद बल्लभ पंत अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पौड़ी : तमसो मा ज्योतिर्गमय
- मदनमोहन मालवीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय गोरखपुर : योगः कर्मसु कौशलम्
- भारतीय प्रशासनिक कर्मचारी महाविद्यालय, हैदराबाद : संगच्छध्वं संवदध्वम्
- इंडिया विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय विधि विद्यालय : धर्मो रक्षति रक्षितः
- संत स्टीफन महाविद्यालय, दिल्ली : सत्यमेव विजयते नानृतम्
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान : शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम्
- विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर : योगः कर्मसु कौशलम्
- मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद : सिद्धिर्भवति कर्मजा
- बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी : ज्ञानं परमं बलम्
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर : योगः कर्मसु कौशलम्
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई : ज्ञानं परमं ध्येयम्
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर : तमसो मा ज्योतिर्गमय
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान चेन्नई : सिद्धिर्भवति कर्मजा
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की : श्रमं विना नकिमपि साध्यम्
- भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद : विद्या विनियोगाद्विकासः
- भारतीय प्रबंधन संस्थान बंगलौर : तेजस्वि नावधीतमस्तु
- भारतीय प्रबंधन संस्थान कोझीकोड : योगः कर्मसु कौशलम्
- सेना ई एम ई कोर : कर्मह हि धर्मह
- सेना राजपूताना राजफल : वीर भोग्या वसुन्धरा
- सेना मेडिकल कोर : सर्वे संतु निरामया
- सेना शिक्षा कोर : विद्यैव बलम्
- सेना एयर डिफेन्स : आकाशेय शत्रुन् जहि
- सेना ग्रेनेडियर रेजिमेन्ट : सर्वदा शक्ति शालिम्
- सेना राजपूत बटालियन : सर्वत्र विजये
- सेना डोगरा रेजिमेन्ट : कर्तव्यम् अन्वात्मा
- सेना गढवाल रायफल : युद्धया कृत निश्चयः
- सेना कुमायू रेजिमेन्ट : पराक्रमो विजयते
- सेना महार रेजिमेन्ट : यश सिद्धि ?
- सेना जम्मू काश्मीर रायफल : प्रस्थ रणवीरता
- सेना कश्मीर लाइट इंफैन्ट्री : बलिदानं वीर-लक्ष्यम्
- सेना इंजीनियर रेजिमेन्ट : सर्वत्र
- भारतीय तट रक्षक : वयम् रक्षामः
- सैन्य विद्यालय : युद्धं प्रगायय
- सैन्य अनुसंधान केंद्र : बलस्य मूलं विज्ञानम्

प्लास्टिक प्रदूषण

एल. के. पाल
पर्यवेक्षक (रा.भा.)

अपनी उपादेयता के कारण प्लास्टिक जहां हमारी रोजमर्रा के जिंदगी में इस हद तक सम्मिलित हो चुका है कि इसे अब जीवन से बाहर निकाल पाना संभव नहीं रह गया है, वहीं इसने प्रदूषण की समस्या को भी बढ़ाया है, जो कि एक नये प्रकार का प्रदूषण है तथा जिसे हम 'प्लास्टिक प्रदूषण'की समस्या कहते हैं। प्लास्टिक में तमाम खूबियां होती हैं। मसलन, यह हल्का होता है, जलावरोधी होता है, इसमें जंग प्रतिरोधक शक्ति तो होती ही है, यह सर्द-गर्म को सहन करने की भी क्षमता रखता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण प्लास्टिक ने देखते ही देखते मानव जीवन पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया और जीवन के हर क्षेत्र में इसका दखल बढ़ा। इन सारी खूबियों के बावजूद प्लास्टिक ने खतरनाक हद तक प्रदूषण की समस्या को बढ़ाया भी है। प्लास्टिक की तमाम खूबियों पर इसका एक अवगुण भारी पड़ता है वह यह है कि प्लास्टिक प्राकृतिक रूप से विघटित नहीं हो पाता है। दीर्घ अवधि तक अपना अस्तित्व बनाए रखने के कारण यह पर्यावरण और प्रकृति को व्यापक पैमाने पर क्षति पहुंचाता है।

आज प्लास्टिक प्रदूषण की एक भयावह तस्वीर हमारे सामने है। यह एक वैश्विक समस्या है। समूचे विश्व में हर साल अरबों की संख्या में खाली प्लास्टिक के थैले फेंक दिए जाते हैं। नाले-नालियों में जाकर ये उनके प्रवाह को अवरुद्ध कर देते हैं। इनकी सफाई तो खर्चीली पड़ती ही है, जल के साथ बहकर ये अंततः नदियों व समुद्रों में पहुंच जाते हैं। चूंकि ये प्राकृतिक रूप से विघटित नहीं होते, इसलिए नदियों, समुद्रों आदि के जीवन व पर्यावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण आए दिन वैश्विक स्तर पर लाखों की संख्या में पक्षियों आदि की मौत की खबरें तो मिलती ही हैं, ये प्रदूषण व्हेल, सील तथा कछुओं आदि की मौत का भी कारण बनता है। ये प्लास्टिक के अंशों को निगलने के कारण काल का ग्रास बनते हैं। आज विश्व का लगभग प्रत्येक देश प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण की विनाशकारी समस्या को झेल रहा है। भारत में तो स्थितियां कुछ ज्यादा ही बदतर हैं। यहां प्लास्टिक की थैलियों को खाने से गायों और आवारा पशुओं के मरने के समाचार रोज मिला करते हैं।

इसकी व्यापकता को समझने के लिए यहां संक्षेप में इसके कुछ प्रमुख उपयोगों के बारे में बताया जा रहा है-

1. सभी प्रकार के कैरीबैग के निर्माण में।
2. पानी की टंकियों, पाइपों तथा नल सम्बन्धी अन्य उपकरणों के निर्माण में।
3. मिनरल वाटर, पेय पदार्थों, दूध, बिस्किट, खाद्य तेल, अनाज आदि खाद्य सामग्री की पैकिंग में।
4. दैनिक उपयोग की वस्तुओं जैसे टूथ ब्रश, टूथपेस्ट ट्यूब, शैम्पू बॉटल, चश्मे तथा कंघी आदि में।
5. दवाइयों तथा उनके डिब्बों, रक्त भंडारण थैलों, तरल ग्लूकोज आदि में।
6. विभिन्न आकार में ढाले गए फर्नीचरों जैसे मेज, कुर्सी, आलमारी,
7. दरवाजे इत्यादि में।

8. वाहनों, हवाई जहाजों तथा अन्य उपकरणों के हिस्सों के निर्माण में।

9. इलेक्ट्रिक सामग्री, इलेक्ट्रानिक उपकरणों, टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर तथा टेलीफोन आदि के निर्माण में।

प्लास्टिक जिस तरह से हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल हो चुका है, उसे देखते हुए इसे एकदम से तो जीवन से निकाला नहीं जा सकता, किंतु समझदारी भरे उपाय कर इस समस्या को एक सीमा तक नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है। इसके लिए हमें तीन कदम मजबूती से बढ़ाने होंगे। पहला कदम यह होना चाहिए कि हम प्लास्टिक के उपयोग को न्यूनतम स्तर पर लाएं और इसके उपभोग में कमी लाएं। दूसरा कदम हमें प्लास्टिक के सामानों के पुनः इस्तेमाल की ओर बढ़ना होगा। यानी इन्हें कचरे में फेंकने के बजाय घरेलू कामों में हम इनका पुनः उपयोग करें। तीसरा कदम है पुनश्चक्रण (Recycling)।

प्लास्टिक नैसर्गिक रूप से विघटित होने वाला पदार्थ नहीं है। एक बार निर्मित हो जाने के बाद यह प्रकृति में स्थाई तौर पर बना रहता है और प्रकृति में इसे नष्ट कर सकने में सक्षम किसी सूक्ष्म जीवाणु के अस्तित्व के अभाव में यह कभी भी नष्ट नहीं होता। अतः इसके कारण गंभीर पारिस्थितिकीय असंतुलन तथा पर्यावरण में प्रदूषण फैलता है।

इसके घुलनशील अथवा प्राकृतिक रूप से विघटित न हो सकने के कारण यह नालों एवं नदियों में जमा हो जाता है जिससे जलप्रवाह के अवरूद्ध होने के कारण जलभराव की समस्या उत्पन्न हो जाती है तथा साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी सफाई आदि की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

जाम हो चुके सीवर के ठहरे हुए पानी में मच्छरों के पैदा होने से मच्छरजनित रोग जैसे मलेरिया, डेंगू आदि फैलना आरंभ हो जाता है।

समुद्री पर्यावरण में प्लास्टिक का कचरा फेंके जाने से सामुद्रिक पारिस्थिति को हानि पहुँचती है। समुद्री जीव इनका उपभोग कर लेते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो जाती है।

प्लास्टिक उद्योग में कार्यरत् श्रमिकों के स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है और उनके फेफड़े, किडनी तथा स्नायुतंत्र दुष्प्रभावित होते हैं। निम्न गुणवत्तायुक्त प्लास्टिक पैकिंग सामग्री पैक किए जाने वाले भोजन एवं औषधियों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया करके उन्हें दूषित एवं खराब कर सकती है जिससे उपयोगकर्ताओं हेतु खतरा उत्पन्न हो जाता है।

प्लास्टिक को जलाए जाने से निकलने वाली विषाक्त गैसों के परिणामस्वरूप गंभीर वायु प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

भारत में प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन में निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं-

1. फेंकी गई प्लास्टिक की रिसाइक्लिग की जानी चाहिए।

2. प्रत्येक मनुष्य को पैकेजिंग के काम में लाई और फेंक दी जाने वाली प्लास्टिक के उपयोग में यथासंभव कमी लानी चाहिए। ऐसे उत्पादों को खरीदना चाहिए जिनकी पैकेजिंग में कम से कम प्लास्टिक का उपयोग किया गया हो तथा ग्राहकों को अपने निजी कपड़े के बैग आदि का उपयोग करना चाहिए। किसी भी प्रकार के प्लास्टिक के पदार्थ को सीवर, नदियों के किनारे अथवा समुद्र के आसपास नहीं फेंका जाना चाहिए।

3. प्रत्येक शहर के नगर निगम अधिकारियों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे प्राकृतिक रूप से विघटित होने तथा न हो सकने योग्य कूड़े के लिए अलग-अलग कूड़ेदानों की व्यवस्था करें। इस प्रकार एकत्रित की गई समस्त प्लास्टिक को रिसाइक्लिग के लिए भेजा जाना चाहिए।

4. जनसाधारण में प्लास्टिक से उत्पन्न खतरों के प्रति सघन जागरुकता अभियान चलाया जाना

चाहिए जिसे स्कूल स्तर से प्रारंभ कर समस्त बाजारों एवं कार्यालयों में कार्यरत जनता तक प्रचारित एवं प्रसारित किया जाना चाहिए। नागरिकों में अपने शहर एवं देश के पर्यावरण की रक्षा के उत्तरदायित्वों का प्रचार किया जाना चाहिए।

5. परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्राकृतिक रूप से विघटित हो सकने योग्य तथा विघटित न हो सकने योग्य अलग-अलग कूड़ेदान के उपयोग के विषय में शिक्षित किया जाना चाहिए जिससे कचरे को सही तरीके से छाँटने में सहायता प्राप्त हो सके।

6. पेट्रोकेमिकल औद्योगिक इकाईयों तथा प्लास्टिक वस्तुओं के समस्त प्रमुख निर्माताओं को अपने उत्पादों में प्रयुक्त प्लास्टिक के रिसाइक्लिग के तरीकों को आम जनता को सूचित करने हेतु बाध्य किया जाना चाहिए।

7. समस्त प्रकार के रिसाइक्लिग एवं ठोस अपशिष्ट निस्तारण परियोजनाओं के सफल संचालन हेतु बैंकों तथा अन्य सरकारी संस्थाओं को आगे आकर अधिक से अधिक सहायता उपलब्ध करानी चाहिए।

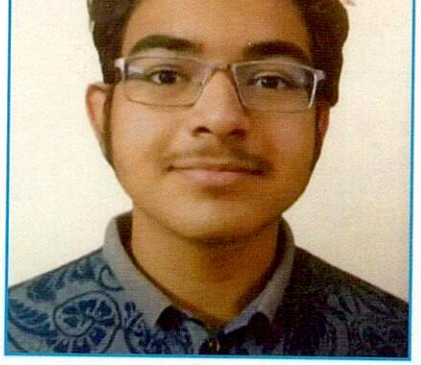

श्री अर्नब कुमार चट्टोपाध्याय, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (उत्कीर्णक) के पुत्र श्री अभिक चट्टोपाध्याय को सेंट झेवियर कॉलेज के माध्यम से नेशनल सायंस ओलंम्पियाड (SOF) में भाग लिया तथा उन्हें सायंस ओलंम्पियाड की तरफ से गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ। उन्हें बहुत-बहुत बधाई तथा उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

वल्लम कली रेस

जाने केरल के सबसे प्रमुख संस्कृति खेल वल्लम कली रेस (Boat Race) त्यौहार के बारे में

गौरी के. कुट्टी
पर्यवेक्षक, बिल एवं बजट अनुभाग

जब सावन का महीना आता है तो बारिश में केरल के लोग अपनी खुशी को पर्व के रूप में जाहिर करते हैं। पानी से जुड़े सबसे ज्यादा फेस्टिवल मानसून में आयोजित होते हैं। केरल की फेमस बोट रेस भी बारिश के मौसम में ही होती हैं। इस रेस को यहां 'वल्लम कली' कहते हैं जिसे देखने दुनियाभर से टूरिस्ट जुटते हैं।

वल्लम कली भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं, यह एक पारंपरिक नाव दौड़ हैं जो भारत के केरल में होता हैं। केरल में वल्लम कली बहुत प्रसिद्ध हैं इसे देखने के लिए लाखों करोड़ों लोग यहां आते हैं। यह मुख्य रूप से शरद ऋतु में ओणम के फसल त्योहार के मौसम के अवसर पर आयोजित किया जाता हैं। यह डोंगी रेसिंग का एक रूप हैं और इस खेल के लिए पैडल्ड युद्ध के डिब्बे का उपयोग करता हैं। केरला में होने वाले वल्लम कली पारंपरिक नाव दौड़ खेल में नौकाओं को केरला में न जाने कितने प्रकार के पैडेड लॉन्गबोट्स, और प्रसिद्धी शामिल हैं। इस खेल में विजेता को नेहरु ट्रॉफी दिया जाता है। नेहरू ट्रॉफी के लिए प्रत्येक टीम 6 लाख रूपया खर्च करती हैं। वल्लम कली को साँपों की नौका दौड़ के रूप में भी जाना जाता हैं और यही देश-विदेश के लोगों का इसके प्रति आर्कषण का प्रमुख केंद्र हैं। केरल में अन्य प्रकार की नौकाएं दौड़ होती हैं, जिसमें सभी लोग प्रतिस्पर्धा करते हैं। नेहरू ट्रॉफी नौका दौड़ एक लोकप्रिय वल्लम कली में आयोजित किया जाता है। 'वल्लम कली' केरल की संस्कृति का अहम हिस्सा है। मानसून में केरल अत्यंत सुंदर हो जाता हैं इसलिए सभी लोग इसके आर्कषण में खिचें आते हैं। पूरे दुनियाँ भर में भारत के अपनी संस्कृति, परिवर्तित मौसम और प्रकृति के अद्भुत नजारों के लिए जाना जाता है, यहां अलग-अलग ऋतुओं के स्वागत मे तीज त्योहार व जब सावन का महीना आता है तो बारिश के कारण लोग अपनी खुशियाँ त्यौहार के रूप में मनाते हैं।

क्यों मनाते हैं वल्लम कली:

वल्लम कली विश्व की सबसे अनूठी ओर रोमांचक नौका प्रतियोगिता का आयोजन हर साल केरला में आयोजित किया जाता हैं। इसका आयोजन ओणम के मौसम में किया जाता हैं जो बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता हैं। प्रसिद्ध वल्लम कली सदियों से चला आ रहा आनुष्ठानिक रिवाज हैं।

वल्लम कली का इतिहास:

चेबांकेसरी के राजा देवनारायण ने चुंदन वल्लम नामक युद्ध में नौका को बनाने का कार्य का प्रारंभ किया और एक बढ़ई को नौका बनाने की जिम्मेदारी दे दिया। आधुनिक युग में प्रयोग होने वाले नावों में से एक नाव उन सभी में से पार्थ सारथी चुंदन है जो कि सबसे पुराना

माँडल हैं। चुंदन वल्लम की दौड़ प्रमुख घटना है। वल्लम कली में केरल के कई अन्य प्रकार के पारंपरिक गद्देदार लाँबोट्स की दौड़ भी शामिल हैं, और यह राज्य के सभी प्रमुख पर्यटक और आर्कषणों में से एक है।

वल्लम कली मे होने वाले प्रसिद्ध खेल प्रतियोगिताएँ:

1) वांचिपट्टू: बोट सांग मलयालम भाषा में एक कविता का स्वरूप है। जिसे वल्लम कली और उससे सम्बन्धित त्यौहार के दौरान प्रयोग किया जाता है इसका अनुष्ठानो में प्रतिभागियों द्वारा वाचि पट्टू का प्रदर्शन किया जाता है।

2) अराणमुला नौका दौड़: यह खेल अराणमुला नामक स्थान पर होता है। अराणमुला नौका दौड़ भी एक प्रसिद्ध खेल है, जो भारत के दक्षिण-पश्चिमी राज्य केरल की बहुत पुरानी खेल नौका दौड़ है। इस खेल का आयोजन अगस्त-सितम्बर माह में किया जाता है। अराणमुला नामक स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण एवं अर्जुन को अर्पित एक मंदिर के निकट किया जाता है। यह समारोह अरन्मुला के पार्थ सारथी मंदिर से काफी नजदीक है। यह पंपा नदी के किनारे स्थित है, पंपा नदी के तटों पर हजारों की संख्या में दर्शक खड़े होकर देखते है। यह खेल उन्हें चमत्कारी रूप से मनमोहित करता है।

3) अरण मूल मंदिर: अरण मूल केरल राज्य की राजधानी से 127 किलोमीटर दूर पर स्थित है। प्रसिद्ध वल्लम कली सदियों से चला आ रहा आनुष्ठानिक रिवाज है। यह खेल केरल में होता है। केरल की संस्कृति-परम्पराएँ, रहन सहन, त्यौहार और धार्मिक महोत्सव देशी विदेशी पर्यटकों के लिए चमत्कारी आर्कषण से कम नहीं है। अरण मूल मंदिर पम्पा नदी के तट पर स्थित है। यहां प्रसिद्ध अरण मूल मंदिर भगवान श्री पार्थ सारथी (श्रीकृष्ण) को समर्पित है, जो अपने प्रिय मित्र अर्जुन के सारथी बने हुए दिखाये गए हैं।

4) पाल्लियोदम (सर्प नौका): अरण मूल की विशेष सर्प नौका (चुण्डन वल्लम) को पाल्लियोदम कहते हैं। इन्हें सभी भक्त लोग यहां के पूज्य आराध्य भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य वाहन के रूप में चलाते हैं। ये पाल्लियोदम पम्पा नदी के विभिन्न तटीय भागों के विभिन्न करो से आती है। प्रत्येक में सामान्यतः 4 चालक, गायक एवं सहायक होते हैं,। नौका को स्वर्णिम झालरों एवं पताकाओं से सजाया जाता है। इनके मध्य में दो से तीन सजी-धजी छतरियाँ भी लगी रहती हैं।

5) नौका दौड़: केरल की अत्यधिक मनमोहित करने वाली जीवंत परम्पराओं का एक अलौकिक नमूना नौका दौड़ है। प्राचीन नौका गीतों के मधुर स्वरों के बीच सर्पों की आकृति जैसी वाली नौका दौड़ को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग इस आयोजन में सम्मलित होते है। यह भी एक प्रसिद्ध खेल है। कई महत्त्वपूर्ण रेस इस खेल के दौरान आयोजित किए जाते है। इन नौका दौड़ की सुन्दरता एवं आनंद का अनुभव स्वयं इन्हें प्रत्यक्ष देखकर ही किया जा सकता हैं।

कुमारकोम बोट रेस:

जिस दिन पय्यपड़ में बोट रेस होती है, उसी दिन प्रसिद्ध रिजॉर्ट कुमारकोम में भी श्री नारायण जयंती बोट रेस होती है। यह रेस केरल में होने वाली बाकी रेसों से अलग है। यह रेस महान समाज सुधारक श्री नारायण गुरु के गांव में आने की याद में आयोजित की जाती है। बताया जाता है कि नारायण गुरु 1903 में नाव में बैठकर अल्लपुझा से कुमारकोम आए थे। उनके साथ कई नावों में लोग थे। इसलिए हर साल श्री नारायण गुरु की जयंती पर उनकी याद में यह बोट रेस होती है।

वल्लम कली केरल का प्रसिद्ध खेल (नौका दौड़) है। जिसमें सभी हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाते हैं, और हजारों की संख्या में लोग इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। आइए जानें केरल के बैकवॉटर में होने वाले इस के बारे में...अगर आप भी इस सावन में कहीं घूमने का प्लान कर कहें हैं तो एंजॉय करें केरल का यह बैकवॉटर कल्चर...

सामाजिक दायित्व

नितिन चाफले
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

हमारा जीवन ईश्वर का दिया हुआ सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इस जीवन रूपी उद्यान को सुगंध से परिपूर्ण बनाने के लिए संकल्प, संस्कार, सुविचार व समर्पण भाव से पोषित करना आवश्यक है। हर व्यक्ति अपने जीवन में अलग-अलग भूमिकाएं निभाता है। हर रूप में उसके कुछ अधिकार और दायित्व भी होते हैं। अधिकारों का उपयोग सब करना चाहते हैं। परन्तु जब दायित्व निभाने की बात आती है तो सबसे पहला प्रश्न जो दिमाग में कौंधता है वह है उससे मुझे क्या मिलेगा, मेरा क्या फायदा? हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्यक्ति के अधिकार, दायित्व और जबावदेहिता साथ-साथ चलते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए जिम्मेदारी लेना जरूरी है। एक गुण जो सभी सफल व्यक्तियों में होता है वो है जिम्मेदारी लेने की क्षमता। अतः अपने दायित्वों को स्वीकार करना चाहिए और समझना चाहिए कि जहा हम पहुंचना चाहते हैं वहां अपने देश और समाज को भी ले जा सकते हैं। अक्सर पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह के प्रति सजगता देखी जाती है और सामाजिक दायित्वों को अनदेखा कर दिया जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मानव का पूर्ण रूप से विकास होना सम्भव नहीं है। अपने देश और समाज से ही हमारी पहचान होती है। जिस तरह से हम निःस्वार्थ भाव से अपने परिवार की सेवा करते हैं उसी प्रकार अपने देश और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी बनती है। जिस देश में हमने जन्म लिया और जहां हमें प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए अवसर व सुविधाएं प्राप्त हुईं उस देश व समाज के लिए हमें पूरी ईमानदारी-समझदारी व जिम्मेदारी से अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए। पूरी निष्ठा व ईमानदारी से दायित्व निर्वाह का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं हमारे सैनिक जो देश और देशवासियों की सुरक्षा के लिए 24 घंटे बार्डर पर तैनात रहते हैं। अपने प्रियजनों से दूर रहकर विषम परिस्थितियों का सामना करते हैं, लेकिन कर्त्तव्य से विमुख नहीं होते। परंतु हम सभी आधारभूत सुविधाएं होने के बाद भी अपनी छोटी-छोटी जिम्मेदारिया जैसे, साफ-सफाई, नियमों का पालन करना इत्यादि को निभाने में भी असमर्थ हैं।

हमारा देश विविधता में एकता के सिद्धान्त में विश्वास रखता है जहा एक से अधिक धर्म, जाति, पंथ, सम्प्रदाय और भाषाओं के लोग एकसाथ रहते हैं। यह वह देश है जो अपनी संस्कृति, परंपरा और ऐतिहासिक धरोहरों के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। वहीं दूसरी तरफ यहां भ्रष्टाचार, आतकवाद, गरीबी, प्रदूषण तथा महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसी समस्यायें विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। इन सबका समाधान सरकार पर चिल्लाने और दोषी ठहराने से नहीं हो सकता। अगर हम अपने दायित्वों का निर्वाह पूरी ईमानदारी से करें तो बहुत जल्द इन समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि 'हजारों कोसों की यात्रा एक कदम से शुरू होती है।' हर माता पिता का कर्त्तव्य है कि अपने बच्चों के स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा नैतिक विकास की देखभाल करें। उन्हें अच्छी आदतें सिखाएं। प्रत्येक नागरिक विभिन्न तरीकों से अपने देश की तरक्की के लिए जिम्मेदार है। हर नागरिक को अपने दायित्व को समझते हुए देश के नेतृत्व के लिए ऐसा नेता चुनना चाहिए जो देश को सही दिशा में ले जा सके। अपने घर और आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना चाहिए, जिससे कि परिवार स्वस्थ और खुशहाल रह सके। हर व्यक्ति को अनुशासित, समय का पाबंद व अपने पेशे के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। व्यर्थ में समय गंवाए बिना अपने दायित्वों को वफादारी के साथ निभाना चाहिए क्योंकि 'यदि हम समय बर्बाद करेंगें तो समय हमें बर्बाद कर देगा।' हमें स्वार्थी नहीं होना चाहिए। स्वयं शन्ति से रहना और दूसरों को शन्ति से रहने देना जीवन जीने की सर्वोत्तम नीति है। अपने दायित्वों का भली भांति पालन करते हुए एक नयी व अच्छी शुरूआत करने का समय है। जीवन की सार्थकता इसी में है कि हमारा आचरण व व्यवहार ऐसा हो कि हमारे जाने के बाद भी हम लोगों के दिल में रहें।

अंबानगरी

जे.पी. कावरे
बुलियन लेखापाल

हाँ, आज मैं मेरे अपने शहर अंबानगरी का चलता फिरता दर्शन आपको करवाऊँगा..। बताना चाहूँगा... भारतवर्ष के सभी अच्छे शहरों में एक है मेरी अंबानगरी... हिंदुस्तान के दख्खन में स्थित विदर्भ का एक महत्त्वपूर्ण अंग अंबानगरी यानि अमरावती..। जिस प्रकार हिमालय के बाहों में सह्याद्रि है...उसी प्रकार भारतवर्ष में अंबानगरी है। जिसकी स्थापना 1097 ई. में हुई। जिसका स्थान भारत में 70 वां, महाराष्ट्र में 6 वां और विदर्भ में दूसरा है। यहाँ के लोग (अमरावतीकर) वर्हाड़ी करके प्रसिद्ध है, जिनकी बोलीभाषा वर्हाड़ी है, जो अपने आप में एक अमरावतीकर का अलग प्रतीक है। यहाँ साक्षरता का बहुत जादा महत्त्व है, इस कारण महाराष्ट्र में पूना के बाद अमरावती को शिक्षा की जननी माना जाता हैं।

इतिहास: अमरावती का प्राचीन नाम 'औदुम्बरावती' प्राकृत में 'उमरावती' है। संस्करण 'अमरावती' वर्तमान में स्वीकृत नाम है। कहा जाता है कि अमरावती का नाम इसके प्राचीन अंबादेवी मंदिर के नाम से रखा गया। अमरावती का प्राचीन नाम उदुम्बरावती है, यहा बड़ी संख्या में ऑडम्बर के पेड़ों की उपस्थिति के कारण था। उम्ब्रावती, उमरावती और अमरावती, औदुम्बरावती के व्युत्पन्न हैं। अमरावती का उल्लेख भगवान आदिनाथ (जैन भगवान) ऋषभनाथ की मूर्ति व पत्थर के शिलालेख पर पाया गया है। मूर्तियाँ वर्ष 1097 की हैं, जब यहाँ हिंदू राजा (यादव वंश) का शासन था। 1722 में मराठा शासक श्रीछत्रपति शाहू महाराज ने मराठा सरदार रानोजी भोंसले को अमरावती भेंट में दिया था, अतः अमरावती को भोंसले की अमरावती के नाम से जाना जाने लगा। शहर का पुनर्निर्माण मराठा रानोजी भोसले ने किया था। ब्रिटिश सेनापति और लेखक वेलेस्ली ने अमरावती में डेरा डाला था जिस कारण यहा एक बड़ा इर्विनव डफ्रीन हॉस्पिटल हैं, बाद मे वर्हाड़ (अमरावती विभाग) निजाम को दोस्ती की निशानी के रूप में प्राप्त हुआ, 1956 में, अमरावती बॉम्बे राज्य का हिस्सा हुआ व 1960 में बॉम्बे राज्य के विभाजन के बाद, यह महाराष्ट्र का हिस्सा बन गया।

विशिष्टता/पर्यटन: अमरावती में सर्वगुण संपन्न वातावरण है, गर्म-शुष्क और ग्रीष्मकाल। आप यहाँ देख सकते है, यहाँ सर्दी में कश्मीरवाली ठंडी और मई में दिल्ली वाली गर्मी मिलती है। अभी तक 5 डिग्री से 49.10 डिग्री सेल्सियस तापमान यहा दर्ज किया गया है।

अंबादेवी: अंबादेवी का मंदिर शहर के केंद्र में स्थित है यह एक प्राचीन व जागृत देवस्थान माना जाता है। नवरात्र में यहाँ प्रसन्न वातावरण रहता है। बड़ी संख्या में लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं।

कोंडेश्वर मंदिर: भगवान शिव को समर्पित कोंडेश्वर मंदिर दक्षिण अंबानगरी के जंगल में है, यहाँ प्राचीन हाथी का मंदिर भी है, मंदिर की वास्तुकला प्राचीन हेमांडपंथी शैली का प्रतिनिधित्व करती है। इसका निर्माण काले पत्थरों का उपयोग करके बनाया गया है।

संत गाडगे बाबा समाधि: महाराष्ट्र के आद्य समाज प्रवर्तक यानि संत गाडगे बाबा जी ने सबसे पहले स्वच्छता अभियान की शुरुवात की थी, अंधश्रद्धा और जनजागृति का कार्य किया, उनकी समाधि पूर्णा नदी के तट पर है और एक भव्य समाज मंदिर है। अंबानगरी के गाडगेनगर में है जो गरीबो के सेवा के लिए है।

कोण्डेनेपुर: जगतविधाता श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मणी का जन्म कोण्डेनेपुर अमरावती में है। जब रुक्मणी का स्वयंवर था उस समय भगवान कृष्ण ने एकविरा देवी के मंदिर से सुरंग बनाकर उन्हें स्वयंवर से भगाकर विवाह रचाया था। यहाँ कृष्ण का महानुभाव पंथ का प्रसिद्ध मंदिर है।

गुरुकुंज आश्रम: संत तुक़डोजी महाराज, महाराष्ट्र के एक महान खंजिरी वादक व समाजसुधारक में से एक थे। गुरुकुंज आश्रम मोजरी में है जहाँ उनकी भव्य समाधि है, आज भी यहाँ गुरुकुल पद्धति की शिक्षा दी जाती है।

टेरिटोरियल आर्मी परेड ग्राउड: अंबानागरी का एक बहूद्देशीय स्टेडियम है, 1958 में पहला रिकोर्डेड क्रिकेट मैच यहाँ आयोजित किया था, 1976 में रणजी ट्रॉफी का मैच विदर्भ व राजस्थान के बीच हुआ था।

बाम्बू गार्डन: बांस के पौधों से तैयार किया हुआ यह सौंदर्यपूर्ण व निसर्गजन्य गार्डन है, यह बांस के 11 प्रजाती से तैयार किया हुआ पार्क है। यह अमरवातीकर का एक प्रिय पिकनिक स्थल है।

मालटेक़डी: यह पहाड़ी शहर के बीचोबीच है जो एक उल्लेखनीय पिकनिक स्थल माना जाता है, इसके परिसर में जॉगिंग ट्रैक है। इस टेक़डी से रात के समय सम्पूर्ण अंबानगरी व उसका भव्य रूप दिखाता है।

वडाली तालाब: यह अंबानगरी का मनोरंजन सुविधाओं के साथ एक पिकनिक स्थल है, कॉलेज के युवक-युवतियों के पसंद की जगह है, जुलाई से फरवरी के दौरान तालाब का पानी साफ रहता है और मौसम भी अच्छा रहता है।

छतरी तालाब: खूबसूरत हरे रंग के परिदृश्य से सजाए गए, आकर्षक जल निकाय, काली बत्तखों का निवास स्थान है। मैनीक्योर घास व चारों ओर रंगीन फूल। लोग यहाँ घूमने के लिए आते हैं, यहाँ प्रेमी नामक प्राणी भी पाये जाते हैं।

HVPM कॉलेज: देश का सबसे बड़ा खेल महाविद्यालय हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल अमरावती में है। जहाँ भारतवर्ष से सभी छात्र खेल एवं शिक्षा के लिए आते है।

VMV कॉलेज: यह कॉलेज एक पुरानी वास्तु है, जो काले पत्थरों से बनी हुई है, जिसकी रचना आसमान से देखा जाए तो VMV के आकर की है।

चिकलदरा: यह अंबानगरी का एक महत्त्वपूर्ण हिल स्टेशन है, जहा प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लिया जा सकता है। यहा कॉफी व स्ट्रोबेरी का उत्पादन किया जाता है। उत्कृष्ट किस्म की कॉफी यहाँ मिलती है।

पौराह का जंगल: पौराह एक निसर्ग रम्य, टेक़डी और ढबधबो घाट से संपन्न जगह है, इस जंगल में तालाब हैं और जंगल सफारी के लिए पसंदीदा जगह मानी जाती है, इस क्षेत्र में बाघ, बिट्या आदि प्राणी पाए जाते है।

तपोवन: डॉ. शिवाजी पटवर्धन द्वारा स्थापित यह एक कुष्टरोगी के लिए सामाजिक संस्था है। जहाँ नैसर्गिक वातावरण में कुष्टरोगी रहते है और तपोवन के लिए कुटीर उद्योग का कार्य करते हैं।

इसके अलावा नल-दमयंती सरोवर, शिक्षा का प्रसिद्ध मंदिर ज्ञानमाता स्कूल, पिंगला देवी मंदिर।

17वी शताब्दी की भव्य वास्तु जवाहर गेट व खोलापुरी गेट, भीम टेक़डी, टाईगर रिसर्व क्षेत्र मेलघाट, मोठा महादेव सालबर्डी, शहनूर धरण, जत्रा के लिए प्रसिद्ध बहिरम व ऋन्मोचन, सतीधाम व भक्तिधाम मंदिर, तूफान

प्वाइंट, प्रॉस्पेक्ट प्वाइंट, देवी प्वाइंट, गाविलगढ़ और नरनाला किला, पंडित नेहरू बॉटनिकल गार्डन, जनजातीय संग्रहालय और सेमाडोह झील व गरम पानी का भीम कुंड आदि प्रसिद्ध हैं।

अंबानगरी खाने-पीने के लिहाज से भी अन्य प्रदेशो से अलग हैं, यहा गाँव का गाँवपन हैं, हँसता-खेलता वातवरण हैं, नाश्ता में यहाँ की साभारवडी, गीला वडा, आलूबोडा, रस्से के साथ पोहा, भोजन में रोडगा पार्टी प्रसिद्ध हैं (रोडगा-याने गेहूं के आटे से तैयार गोले आग-भट्टी मे पकाए जाते हैं जो दाल-बेंगन-बटाटा सब्जी के साथ खाते हैं), सावजी मटन, ढाबे का खाना आदि प्रसिद्ध हैं। अंबानगरी का वरुड तालुका संतरा नगरी के नाम से प्रसिद्ध है जहां सबसे जादा संतरे का उत्पादन होता हैं। कपास का बड़ा मार्केट हैं जो कॉटन मार्केट नाम से जाना जाता हैं।

अंबानगरी ने भारतवर्ष को बहुत कुछ दिया हैं... अमरावती यह महान व्यक्तियों की भूमि हैं, कई महान सरकारी अधिकारी एंव नेता इस भूमि से हैं। स्वतंत्र भारत के पहले कृषिमंत्री अंबानगरी कें श्री भाऊसाहब देशमुख थे जिनकी शिवाजी शिक्षण संस्था ज्ञानदान का कार्य करती है, क्रिकेटपटु हेमेंत कानिटकर, मराठी कवि सुरेश भट, हिन्दी अभिनेता मोहन देशमुख, देश की पहले महिला महामहिम राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील अंबानगरी से हैं, क्रीडा विद्यालय के जनक प्रभाकर वैद्य, मराठी मनोरंजन के बादशाह भारत गणेशपूरे आदि। हाल ही में हनुमान चालीसा के लिए अमरावती के नेता पूरे हिंदुस्तान में प्रसिद्ध हुए थे यह एक अलग बात हैं लेकिन हमारी अंबानगरी हमेशा देश का महत्त्वपूर्ण अंग रही है और रहेगी।

दीपावली महोत्सव

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में दिनांक 03.11.2022 को हर्षोल्लास के साथ दीपावली महोत्सव मनाया गया। टकसाल परंपरा के अनुसार दीपावली महोत्सव के लिए दिवस एवं रात्री पारी के कर्मचारियों को दिनांक 3.11.2021 को एक ही पारी में सुबह 8.00 बजे बुलाया गया। सुबह 8.00 से 8.45 बजे तक दोनों पारियों के कर्मचारियों ने अपने-अपने विभागों/अनुभागों में एक दूसरे को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ दी, तथा ठीक 9.00 बजे मिंट स्टेज के सामने मुख्य महाप्रबंधक महोदय का दीपावली संदेश सुनने के लिए इकठ्ठा हुए जो केवल संदेश न होकर भविष्य में टकसाल प्रबंधन का उद्देश्य, सिक्कें तथा गैर-सिक्कें के उत्पादन की रूप-रेखा होती है। इसी के साथ-साथ पूरे वर्ष के दौरान टकसाल द्वारा किये गए उल्लेखनीय कार्यों का व्योरा भी मुख्य महाप्रबंधक महोदय बताते हैं।

सर्वप्रथम कामगार कल्याण निधि समिति के सह-सचिव श्री संजय सावंत ने मुख्य महाप्रबंधक एवं मंचासीन सभी अधिकारियों का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया। सभी विभागों/अनुभागों के प्रभारियों ने मुख्य महाप्रबंधक को पुष्पहार एवं पुष्प गुच्छ देकर अपनी शुभेच्छा व्यक्त की। मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, यूनियनों, एसोसिएसनों, क्रेडिट सोसाइटी स्टाफ तथा सीआईएसएफ़ के जवानों को दीपावली की शुभकामनाएँ दी तथा अपने संदेश में कहा- दीपावली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात 'दिया' व 'आवली' अर्थात 'लाइन' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। कुछ लोग 'दीपावली' तो कुछ लोग 'दीवाली' का प्रयोग करते हैं। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। हर प्रांत या क्षेत्र में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। लोगों में दीवाली की बहुत उमंग होती है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ़ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बाँटते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनायी जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है। बड़े छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई अपने कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास, संरक्षा एवं सुरक्षा तथा देश के लिए मुद्रा का निर्माण करके देशसेवा के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। वर्ष 2021-22 के लिए निगम मुख्यालय द्वारा दिए गए सिक्कें के मांग को समय पर पूर्ण करने की ओर अग्रसर है । इसके साथ-साथ गैर-सिक्कों के उत्पादन के क्षेत्र में लगातार विकास की ओर प्रयासरत है। हाल में ही, टीटीडी देवस्थानम से मंगलसूत्र तथा लॉकेट बनाने का ऑर्डर हमें प्राप्त हुआ है। इसके साथ-साथ ही दिवाली में माता लक्ष्मी के सोने एवं चाँदी के सिक्कों के सेल को बढ़ाने के उद्देश्य से उनकी कीमतों में कमी की गई। टकसाल मुंबई में टीपीएम के 5 S की शुरुवात हो चुकी है। इसे पूर्ण रूप से लागू करते हुए क्रियान्वित करना है। मुझें पूरा विश्वास है कि सभी के सहयोग से आगे भी हम सफलता के शिखर की ओर दृढ़ता पूर्वक अग्रेसर रहेंगे और कंपनी को गौरवान्वित करते रहेंगे । मैं समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों, यूनियनों, एसोसिएशनों, कार्य समिति एवं कामगार कल्याण निधि समिति, को-आपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी स्टाफ, सीआईएसएफ़ के जवानों तथा उनके परिजनों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह वर्ष हम सब के लिए शांति, समृद्धि और खुशियाँ लाए और हम सभी बाधाओं को पार करते हुए अपने कार्यों में सफलता पाएं और उत्पादन को नई ऊंचाइयों तक ले जाएं यही मेरी आकांक्षा है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

सतर्कता सप्ताह का आयोजन दिनांक 26 अक्टूबर 2021 को इकाई के मुख्य महाप्रबंधक श्री वी.एन.आर. नायुडु के द्वारा दीप प्रज्वलित करते हुए किया गया। सम्मेलन कक्ष में उपस्थित समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने शपथ समारोह में भाग लिया। इकाई में दिनांक 26 अक्टूबर, 2021 से दिनांक 01 नवंबर, 2021 तक विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं तथा अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन के दिवस पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार देकर मुख्य महाप्रबंधक द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

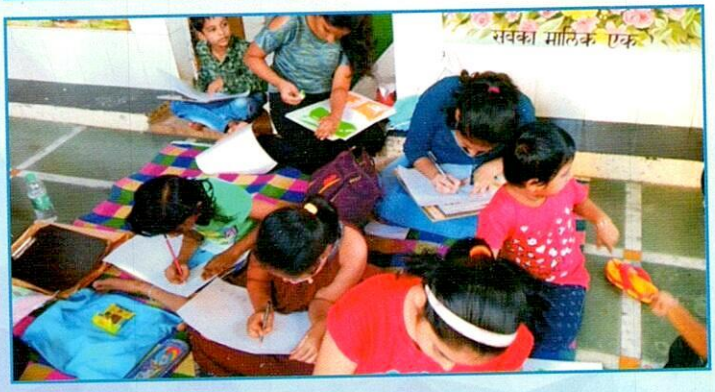

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

Congratulations

भारत सरकार टकसाल, (एसपीएमसीआईएल की इकाई) मुंबई में मुख्य महाप्रबंधक श्री वी.एन.आर. नायुडु की अध्यक्षता में 14 से 30 सितंबर 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े की शुरुवात सर्वप्रथम इकाई के मुख्य महाप्रबंधक श्री वी.एन.आर. नायुडु द्वारा दीप प्रज्वलित करते हुए शुरुवात की गई। 14 सितंबर हिन्दी दिवस के अवसर पर उप महाप्रबन्धक (राभा) श्री योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल ने सर्वप्रथम, गृह मंत्री तथा एसपीएमसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सुश्री तृप्ति पात्रा घोष के संदेश पढ़कर सुनाए। इसके पश्चात श्री एल के पाल, पर्यवेक्षक (राभा) द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं का सविस्तार वर्णन किया। इस अवसर पर फाइल नोटिंग, निबंध, अनुवाद एवं टिप्पणी लेखन, हस्तलेख तथा काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

फाइल नोटिंग प्रतियोगिता केवल अधिकारियों के लिए थी। इसमें उन्हे वे टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखने के लिए दी गई थी जिनका वे दैनिक कार्यों में प्रयोग करतें हैं।

1. निबंध के विषय थेः
   i. भारत का अमृत महोत्सव, अथवा
   ii. अवसर एवं चुनौतियाँ 'ऑनलाइन शिक्षण'

हिन्दी निबंध प्रतियोगिताओं में बहुत सारे अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। पूरी प्रतियोगिता के दौरान कोविड-19 के नियमों का पालन किया गया। इसके साथ-साथ इकाई में निर्धारित कवियों के काव्य पाठ का आयोजन किया गया। जिसमें लेखा कार्यालय के अतिरिक्त कारखाने में कार्यरत कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य था कि कर्मचारी हिन्दी के नए शब्द, वाक्य विन्यास सीखें, हिन्दी अँग्रेजी, मराठी शब्दकोश देखें एवं जानें कि तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी आज कितनी प्रगति कर चुकी है। इसके साथ-साथ ही वर्तमान में फैली करोना कोविड-19 के कारण ऑनलाइन शिक्षा में हुए बदलाव की जानकारी भी प्राप्त करें।

30 सितंबर, 2021 को पुरस्कार वितरण तथा हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री वाई पी शुक्ल, उप महाप्रबंधक (राभा) ने हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा कैसे प्राप्त हुआ से लेकर संविधान के अनुच्छेद 349 से 351 का सविस्तार वर्णन करते हुए नियमों अधिनियमों की जानकारी दी। अंत में श्री वी. एन. आर. नायुडु, मुख्य महाप्रबन्धक ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण

1: निबंध प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. श्री मनीष पगार, पर्यवेक्षक (तकनीकी)(गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री पुरेन्द्र सी दूबे, प्रयोगशाला सहायक (हिन्दी भाषी)

द्वितीय पुरस्कार:

1. श्री नितिन चाफले, वरिष्ठ कार्यालय सहायक (गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री शरद खारवणे, टि.न. 3805, मिलराइट

तृतीय पुरस्कार:

1. सुश्री स्वप्नाली डी मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक (गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री दिनेश सुथार, उप प्रबन्धक (सू प्रौ)

सांत्वना पुरस्कार:

1. श्री शशिकांत भारती, प्रयोगशाला सहायक
2. श्री आर व्ही बिरवटकर, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
3. श्री अमित कौलकार, क. कार्यालय सहायक
4. सुश्री टी स्वप्ना कुमारी, सहायक बुलियन लेखापाल

2: टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. सुश्री नीता राजेश, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (धातु परीक्षण) (गैर-हिन्दी भाषी)

द्वितीय पुरस्कार:

1. सुश्री कविता एस. मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2. श्री पुरेन्द्र सी दूबे, प्रयोगशाला सहायक

तृतीय पुरस्कार:

1. सुश्री सुमन जगदाले, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (धातु परी.)
2. सुश्री सुप्रिया एच घाग, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
3. श्री जयगोपाल कावरे, बुलियन लेखपाल

सांत्वना पुरस्कार:

1. सुश्री लीना नायर, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2. सुश्री अमिता जायसवाल, सहायक बुलियन लेखपाल
3. सुश्री नयना शिरसाठे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक

3: टाइपिंग प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. सुश्री प्रिया ए. घरपणकर, वरिष्ठ कार्यालय सहायक

द्वितीय पुरस्कार:

1. सुश्री धनश्री विकास कोलंबकर, सहायक बुलियन लेखापाल
2. श्री अजय तिवारी, पर्यवेक्षक

तृतीय पुरस्कार:

1. श्री नितिन चाफले, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2. सुश्री कविता एस. मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
3. सुश्री श्रद्धा पी सनये, कार्यपालक सहायक

सांत्वना पुरस्कार:

1. सुश्री स्वप्नाली मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2. श्री पांडुरंग जी. कदम, रिकॉर्डर, टि.न. 3644
3. श्री स्वप्निल बाघ, कनिष्ठ कार्यालय सहायक

4. फाइल नोटिंग प्रतियोगिता - अधिकारी वर्ग:

1. श्री मंगेश चव्हाण, उप महाप्रबंधक (तकनीकी प्र)
2. श्री शोएब शेख, उप महाप्रबंधक (विपणन)
3. श्री शेखर मीणा, उप महाप्रबंधक (त प्र)
4. श्री अखिल भगत, प्रबंधक (सतर्कता)
5. सुश्री स्रग्धरा मजूमदार, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
6. श्री दिनेश सुथार, उप प्रबंधक (सू प्रौ)
7. श्री नवदीप शर्मा, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
8. श्री हेमंत एल देशपांडे, सहायक प्रबंधक (त नि)

5. हस्त-लेख प्रतियोगिता:

औद्योगिक कामगार:

1. श्री जगदीश गुणाजी पवार, टि.न. 3458, कोइनिंग विभाग
2. श्री शरद आसाराम खारवणे, वरिष्ठ प्रचालक, टि. न. 3805
3. श्री रणजित प्रेमसिंग पाटिल, टि.न. 3766, वेल्डर
4. श्री प्रकाश बाइत, वरिष्ठ प्रचालक टि.न. 3695, प्रेस शॉप
5. श्री गौतम आर जोंधले, पेंटर, टि.न. 3811
6. श्री शिवाजी यशवंत गायकवाड, टि.न. 3798

6: काव्य पाठ प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

सुश्री निता राजेश, व.पर्यवेक्षक (धा प)

द्वितीय पुरस्कार:

1. श्री एस जे निकम, उप प्रबंधक (तक प्र)
2. श्री गोपाल होडावडेकर, वरिष्ठ प्रचालक, टि.न. 3667

तृतीय पुरस्कार:

1. सुश्री गौरी कुट्टी, पर्यवेक्षक
2. श्री अजय तिवारी, पर्यवेक्षक
3. सुश्री सुमन जगदाले, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (धातु परी)

सांत्वना पुरस्कार:

1. श्री प्रमोद डांबरे, वरिष्ठ प्रचालक, टि.न. 3778

7: मिंट पत्रिका में लेख लिखने वाले कामगार:

1. श्री सुनील रॉय, दवाखाना विभाग

उत्कृष्ट राजभाषा पुरस्कार (पर्यवेक्षकों के लिए)

1. श्री जी.एच सैनानी, पर्यवेक्षक
2. श्री सुरेश कुमार, वरिष्ठ पर्यवेक्षक

8: प्रोत्साहन पुरस्कार (अनुभाग के लिए)

1. बिल बजट अनुभाग
2. मातौरि अनुभाग
3. स्थापना अनुभाग
4. प्रशासन अनुभाग

सेवा निवृत्त

वर्गीकृत कर्मचारी

श्रीमती एस.एस. पिलनकर
पर्यवेक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-01-2021

श्री पी.ए. पवार
सुरक्षा रक्षक
सेवा निवृत्ति : 28-02-2021

श्री ए.एस. टट्टी
पर्यवेक्षक
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

श्री एस.पी. शिंदे
पर्यवेक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

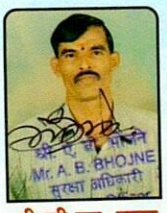

श्री व्ही.एस. सुतार
वरिष्ठ सुरक्षा रक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री एम.एम. मरसकोले
वरिष्ठ सुरक्षा रक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-07-2021

श्री एस.बी. तायडे
सुरक्षा रक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-07-2021

श्रीमती पी.पी. दळवी
जूनियर अटेंडेंट (कार्यालय)
सेवा निवृत्ति : 31-07-2021

श्री एस.एम. घाग
वरिष्ठ सुरक्षा रक्षक
सेवा निवृत्ति : 31-07-2021

श्री व्ही.बी. घागरे
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (तकनीकी)
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

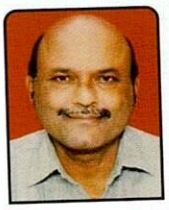

श्री व्ही.एम. मालनकर
पर्यवेक्षक (उप.बुलियन अधिकारी)
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री एस.के. लिंगायत
एंग्रेवर-I/चार्जमैन
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्रीमती पी.पी. खेडेकर
सहायक प्रबंधक (मा.सं.)
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति : 18-11-2021

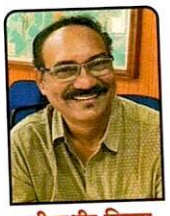

श्री सुधीर निकम
प्रबंधक (तक-नियंत्रण)
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

औद्योगिक कामगार

श्री एम.एच. पटेल
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-01-2021

श्री आर.बी. लुश्टे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-01-2021

श्री एस.आर. पांचाळ
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 28-02-2021

श्री ए.बी. गौडा
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 28-02-2021

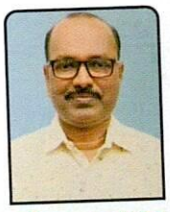

श्री ए.एस. अंबोले
फोरमेन
सेवा निवृत्ति : 28-02-2021

श्री डी.पी. वाडेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 28-02-2021

श्री आर.बी. भोज
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

श्री वाय.डी. कदम
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

श्री जे.एस. पवार
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

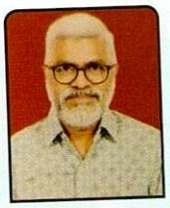

श्री एस.टी. दळवी
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

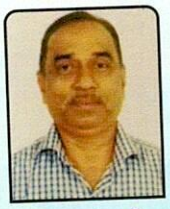

श्री आर.व्ही. मयेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

श्री व्ही.आर. पिंपळे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

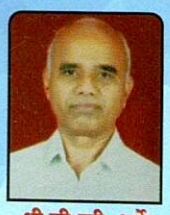
श्री सी.व्ही. भुर्के
प्रचालक
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति : 31-03-2021

श्री आर.बी. दरेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-04-2021

श्री यु.एन. बांगर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-04-2021

श्री सी.पी. मिसाळ
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री ए.जी. कानाल
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री पी.व्ही. दुबुले
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री डी.के. भानसे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री एच.डी. गाडे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री ए.एच. कदम
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री डी.डी. सर्जिने
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री एन.बी. भानसे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री ए.बी. भानसे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री सी.आर. बागळ
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री डी.पी. देसाई
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री ए.बी. शिंदे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री पी.एस. वाघरे
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री डी.एस. कांबळे
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री आर.डी. निर्मल
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री बी.बी. तळपे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

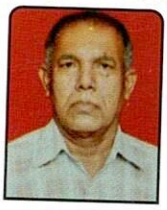
श्री बी.डी. बागळ
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री एम.टी. शिंदे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री व्ही.जी. गवहाणे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री के.टी. खेडेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

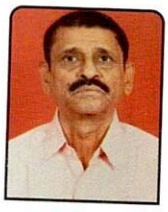
श्री डी.डी. फडतरे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री आर.बी. मोरे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री जे.व्ही. काटकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री एच.एल. दामा
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-05-2021

श्री ए.एल. सकपाल
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-06-2021

श्री बी.डी. नेमाणे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-06-2021

श्री आर.आर. यादव
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 30-06-2021

श्री एन.जे. परमार
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-07-2021

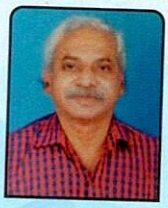
श्री यु.एस. मालंकर
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-08-2021

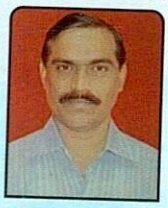
श्री के.बी. तापकीर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-08-2021

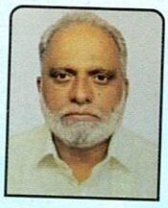
श्री एम.एफ.ए. खान
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-08-2021

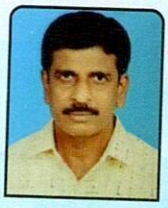
श्री व्ही.एस. नार्वेकर
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-08-2021

श्री बी.एस. सुर्वे
तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

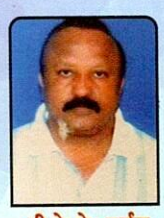

श्री के.के. नाईक
वरिष्ठ प्रचालक
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

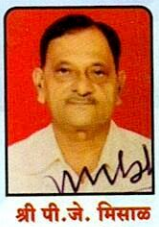

श्री पी.जे. मिसाळ
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

श्री जी.जे. कोळी
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

श्री ए.एस. कदम
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

श्री पी.आर. आगरे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-09-2021

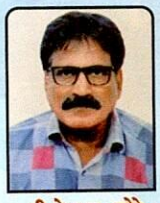

श्री के.एस. बोरे
प्रचालक
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति : 14-10-2021

श्री ए.एस. विटमल
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

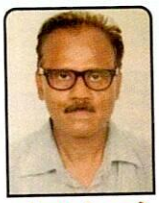

श्री एस.डी. कडने
वरिष्ठ प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री एस.एच. पाटिल
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री व्ही.डी. जोशी
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री डी.एम. महाडिक
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री व्ही.डी. पार्टे
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री डी.आर. मुळे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

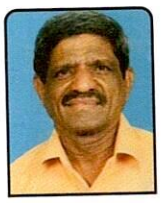

श्री एस.आर. बिर्जे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

श्री मिर आर.ए.डबल्यू.अली
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवा निवृत्ति : 31-10-2021

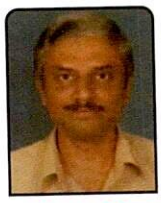

श्री के.डी. बेलेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-11-2021

श्री एस.के. तळेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-11-2021

श्री यु.एस. महागांवकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-11-2021

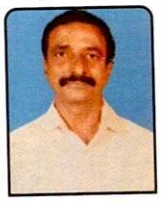

श्री डी.डी. मालुसरे
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 30-11-2021

श्री के.डी.मिठबावकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

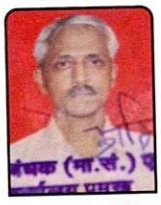

श्री व्ही.एल. दिवेकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

श्री आर.एम. चव्हाण
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

श्री आर.जी. काटकर
प्रचालक
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

श्री एम.एम. वाजे
फोरमेन
सेवा निवृत्ति : 31-12-2021

अन्य गतिविधियाँ